



TIMES OF PEDIA

NEW DELHI Page 12 Price Rs. 3.00

अनोखे अंदाज़ और निराले तेवर के साथ इंसाफ़ की डगर पर

WEEKLY HINDI, ENGLISH, URDU

www.timesofpedia.com

WED 18 MARCH - TUE 24 MARCH 2026

VOL. 14. ISSUE 12

RNI No. DELMUL/2012/47011

दिल्ली बजट 2026-27: 'ग्रीन बजट' पर ज़ोर, स्वास्थ्य, पर्यावरण और बुनियादी सुविधाओं को मिली प्राथमिकता

पर्यावरण और पर्यटन पर फोकस

सरकार ने पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देते हुए पर्यावरण विभाग का बजट 505 करोड़ से बढ़ाकर 835 करोड़ रुपये कर दिया है। साथ ही, वन क्षेत्र के विकास के लिए 130 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बजट 121 करोड़ से बढ़ाकर 412 करोड़ रुपये कर दिया गया है। राजधानी में नए वेलकम गेट और अतिथियों के लिए विशेष सुविधाएं विकसित करने की भी योजना है।

बुनियादी सुविधाओं में सुधार

महिलाओं और आम नागरिकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए दिल्ली में 1000 नए सार्वजनिक शौचालय बनाने की घोषणा की गई है। सरकार का कहना है कि इससे स्वच्छता और शहरी सुविधाओं में सुधार होगा।



स्वास्थ्य क्षेत्र को बड़ी सौगात

स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए 12,645 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'उपचार हर व्यक्ति का अधिकार है, उपकार नहीं।' अधूरे पड़े अस्पतालों के निर्माण कार्यों को पूरा करने के लिए 515 करोड़ रुपये रखे गए हैं, जबकि मशीनों और दवाइयों की खरीद के लिए 787 करोड़ रुपये का अतिरिक्त फंड दिया गया है। सरकार ने आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के विस्तार की भी घोषणा की है।

नई दिल्ली : दिल्ली सरकार ने वित्त वर्ष 2026-2027 के लिए 1,03,700 करोड़ रुपये का वार्षिक बजट पेश किया। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बतौर वित्त मंत्री विधानसभा में बजट पेश करते हुए इसे 'ग्रीन बजट' करार दिया और कहा कि राजधानी तेजी से विकास के

नए दौर में प्रवेश कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली में 'ट्रिपल इंजन' सरकार के सहयोग से विकास कार्यों को गति मिल रही है। उन्होंने 'मुफ्त की योजनाओं की संस्कृति' पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि इससे विकास दर प्रभावित होती है।

बजट में 74,000 करोड़ रुपये के कर राजस्व का अनुमान लगाया गया है, जबकि दिल्ली नगर निगम (MCD) के लिए 11,666 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इससे पहले सोमवार को सदन में आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट पेश की गई थी, जिसमें

दिल्ली की प्रति व्यक्ति आय देश में तीसरे स्थान पर बताई गई। वहीं, विपक्षी दल आम आदमी पार्टी ने बजट सत्र का बहिष्कार किया। विपक्ष की नेता आतिशी ने स्पीकर को पत्र लिखकर विधायकों के निलंबन को इसका कारण बताया।



पालम में भीषण आग: 9 की मौत, राहत कार्य में देरी और फायर ब्रिगेड पर उठे सवाल

नई दिल्ली : (टॉप ब्यूरो)

दिल्ली के पालम इलाके में बुधवार सुबह एक दर्दनाक हादसे में पांच मंजिला इमारत में लगी भीषण आग से 9 लोगों की मौत हो गई, जबकि 3 लोग घायल हो गए। यह घटना पालम मेट्रो स्टेशन के पास हुई, जहां इमारत के निचले हिस्से में दुकानें और ऊपरी मंजिलों पर एक ही परिवार के लोग रहते थे।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, सुबह करीब 6:45 बजे आग लगने की जानकारी मिली। स्थानीय लोगों ने तुरंत फायर ब्रिगेड को सूचना दी, लेकिन दमकल की गाड़ियां मौके पर देर से पहुंचीं। आरोप है कि जब फायर ब्रिगेड पहुंची, तब उसकी हाइड्रोलिक लिफ्ट ठीक से काम नहीं कर पाई, जिससे राहत कार्य प्रभावित हुआ। आग



तेजी से फैलने के कारण इमारत में फंसे लोग बालकनी और छज्जों पर आ गए और मदद के लिए चिल्लाते रहे। धुएं के कारण नीचे उतरना संभव नहीं था। कुछ लोगों ने जान बचाने के लिए ऊपर से छलांग लगा दिया, जबकि एक छोटे बच्चे को बचाने के प्रयास में नीचे फेंका गया, जो गंभीर रूप से घायल हो गया।

स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि फायर ब्रिगेड की मशीनरी सही तरीके से काम

करती, तो कई जानें बचाई जा सकती थीं। इस घटना को लेकर फायर ब्रिगेड की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं।

मौके पर पहुंचे आम आदमी पार्टी के नेता सौरभ भारद्वाज ने भी राहत कार्य में देरी और उपकरणों की खराबी को लेकर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि राजधानी के बीचोंबीच ऐसी घटनाएं और राहत में लापरवाही बेहद चिंताजनक है। वहीं, दिल्ली अग्निशमन सेवा

(DFS) के अनुसार, सुबह करीब 7 बजे आग लगने की सूचना मिलने पर 30 दमकल गाड़ियों को मौके पर भेजा गया और बचाव कार्य शुरू किया गया।

इस घटना के बाद मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दिए हैं। साथ ही, उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू ने दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (DDMA) की बैठक में पूरे शहर में व्यापक अग्नि सुरक्षा ऑडिट कराने के निर्देश दिए हैं।

इसके अतिरिक्त, प्रशासन को निर्देशित किया गया है कि राजधानी की सभी बहुमंजिला इमारतों, बाजारों और रिहायशी इलाकों में फायर सेफ्टी मानकों की सख्ती से जांच की जाए और जहां भी लापरवाही पाई जाए, वहां तत्काल कार्रवाई की जाए।

अरविंद केजरीवाल ने हार की वजह पर उठाए सवाल, वोटर लिस्ट में गड़बड़ी का लगाया आरोप



नई दिल्ली: दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने नई दिल्ली विधानसभा सीट से अपनी हार को लेकर एक बार फिर केंद्र सरकार पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने दावा किया कि वोटर लिस्ट में गड़बड़ी कर उन्हें चुनाव में हराया गया। केजरीवाल ने कहा कि उनके जेल जाने के दौरान बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम सूची से हटा दिए गए, जिससे उन्हें नुकसान उठाना पड़ा। उन्होंने बताया कि पिछली बार उन्हें करीब 1.48 लाख वोट मिले थे, लेकिन इस बार यह संख्या घटकर लगभग 1.06 लाख रह गई। उनके अनुसार, करीब 42 हजार वोट कम हो गए, जो कुल वोटों का लगभग 30 प्रतिशत है। उन्होंने आरोप लगाया कि इसी कारण उन्हें मामूली अंतर से हार का सामना करना पड़ा।

पूर्व मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि चुनाव में अनियमितताएं की गईं और वोट जोड़ने-घटाने के साथ फर्जी मतदान और ईवीएम में हेरफेर जैसी गतिविधियां भी हुईं।



ईरान-अमेरिका तनाव के बीच तेल बाज़ार में उतार-चढ़ाव



Ali Aadil Khan
Editor

मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव और अमेरिका-ईरान के बीच बयानबाज़ी का असर अब वैश्विक तेल बाज़ार पर साफ़ दिखाई देने लगा है। सोमवार को आई भारी गिरावट के बाद मंगलवार को कच्चे तेल की कीमतों में एक बार फिर भारी उछाल दर्ज किया गया।

एशियाई बाज़ार में मंगलवार सुबह ब्रेंट क्रूड की कीमत अचानक 3.75 % बढ़कर 103.69 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई। लेकिन यह उछाल और गिरावट का खेल कौन और क्यों खेलता है ? इसको समझना

भी जरूरी है।

सोमवार को अचानक ब्रेंट क्रूड में 10% से ज्यादा की गिरावट दर्ज की गई थी। ब्रेंट क्रूड (Brent Crude) उत्तरी सागर (North Sea) से निकाला जाने वाला

इस्तेमाल यूरोप, अफ्रीका और मध्य पूर्व से आने वाले तेल के दो-तिहाई हिस्से की कीमत निर्धारित करने के लिए किया जाता है।

इस गिरावट की मुख्य वजह अमेरिकी राष्ट्रपति Donald

ट्रंप बयानों से बाज़ार में तनाव कम होने की उम्मीद जगी, जिससे कीमतों में तेज़ी से गिरावट आ गई।

हालांकि, यह राहत 24 घंटे भी नहीं टिक सकी क्योंकि ईरान ने ट्रंप के शांति समझौते के दावों को खारिज कर दिया, और इसको झूठ और फरेब बताया। जिसके फौरन बाद बाज़ार में फिर अनिश्चितता बढ़ गई।

इसके बाद निवेशकों ने दोबारा जोखिम को ध्यान में रखते हुए खरीदारी शुरू कर दी, यानी बाज़ार में मांग बढ़ गई और तेल की कीमतें फिर ऊपर चढ़ने लगीं।

विशेषज्ञों के मुताबिक मध्य पूर्व में तनाव बढ़ने से तेल सप्लाई पर खतरा बना रहता है

खासकर Strait of Hormuz जैसे अहम मार्ग प्रभावित होने से दुनिया भर में ईंधन की कीमतों में इजाफ़ा हो जाता है जिससे आम जरूरत की चीज़ों के दामों पर भी दबाव बढ़ जाता है।

आप कह सकते हैं शेयर बाज़ार की तरह तेल बाज़ार फिलहाल पूरी तरह खबरों और बयानों पर निर्भर हो गया है। एक बयान कीमतें गिरा देता है तो दूसरा बयान कीमतों में

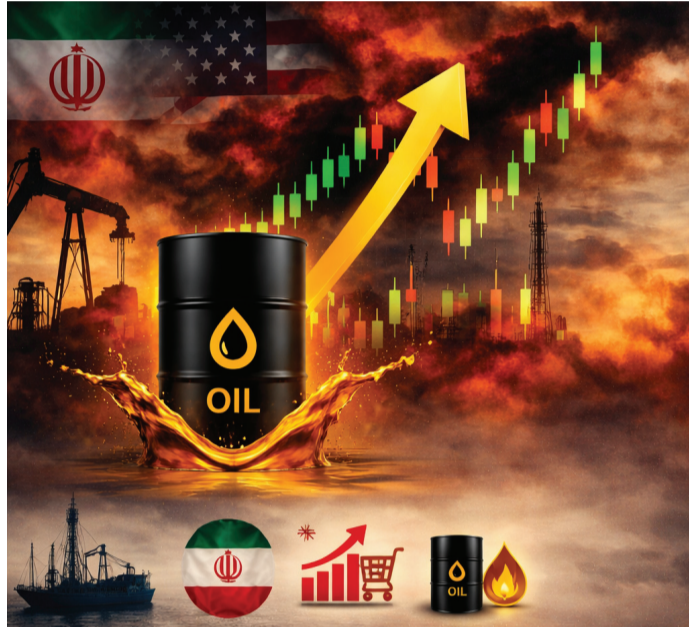
उछाल पैदा कर देता है।

यह स्थिति बताती है कि बाज़ार में अनिश्चितता चरम पर है और निवेशक हर नए घटनाक्रम पर तुरंत प्रतिक्रिया दे रहे हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं कि मध्य पूर्व में जारी तनाव और अमेरिका-ईरान के बीच जारी बयानबाज़ी ने तेल बाज़ार को अस्थिर बना दिया है। कीमतों में उतार-चढ़ाव यह संकेत दे रहा है कि आने वाले दिनों में वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका असर और गहरा हो सकता है।

लेकिन इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं के अमीर लोग तेल के साथ Commodities का स्टॉक शुरू कर दें जिसका भारी प्रभाव औसत दर्जे के उपभोक्ता पर पड़ेगा, लोगों में पेनिक फैलेगा और अफरातफरी बढ़ जायेगी।

लिहाज़ा इसके लिए प्रधानमंत्री देश को सम्बोधित करके जनता को विश्वास और इत्मीनान दिलाएं कि किसी प्रकार के पेनिक की जरूरत नहीं है सरकार हर एक देशवासी की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम है।



एक हल्का और कच्चा तेल है, जो दुनिया भर में तेल की कीमतों का सबसे प्रमुख बेंचमार्क है। यह डीजल और पेट्रोल बनाने के लिए एक नंबर का कच्चा माल होता है, जिसका

Trump का बयान था, जिसमें उन्होंने संकेत दिया था कि ईरान पर नए हमले फिलहाल टाले जा रहे हैं। और इसके बाद जल्द ही शांति समझौते की संभावना बन सकती है।

खाड़ी संकट के बीच भारत की संतुलित कूटनीति और स्पष्ट रणनीति



Kausar Jahan

मध्य-पूर्व, विशेषकर खाड़ी क्षेत्र में मौजूदा तनावपूर्ण हालात ने वैश्विक राजनीति को एक बार फिर अस्थिर बना दिया है। ईरान, अमेरिका और इज़राइल के बीच बढ़ते टकराव का असर पूरे क्षेत्र पर साफ़ दिखाई दे रहा है। इस जटिल और संवेदनशील स्थिति में भारत ने एक जिम्मेदार, संतुलित और

परिपक्व राष्ट्र के रूप में अपनी भूमिका निभाई है।

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने जहां अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा को प्राथमिकता दी है, वहीं क्षेत्र में शांति और स्थिरता के समर्थन में भी स्पष्ट रुख अपनाया है। भारत की विदेश नीति लंबे समय से संतुलन, संवाद और व्यवहारिकता पर आधारित रही है, और वर्तमान संकट में भी यही दृष्टिकोण सामने आया है।

खाड़ी देशों और ईरान में बड़ी संख्या में भारतीय नागरिक काम करते हैं। ऐसे में संकट के समय उनकी सुरक्षा भारत सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल रही है। सरकार ने सक्रिय कूटनीति के जरिए संकटग्रस्त क्षेत्रों में फंसे भारतीयों की सुरक्षित

वापसी सुनिश्चित करने के लिए लगातार प्रयास किए हैं। इस दौरान किसी भी प्रकार का भेदभाव न करते हुए हर नागरिक की सुरक्षा को समान महत्व दिया गया।

मध्य-पूर्व में बढ़ती अस्थिरता के बीच ऊर्जा आपूर्ति भी एक बड़ी चिंता का विषय बनी हुई है। आबनाए हॉर्मुज़ जैसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग से गुजरने वाले भारतीय जहाजों की सुरक्षित आवाजाही भारत की कूटनीतिक और सामरिक क्षमता को दर्शाती है। भारतीय ध्वज वाले जहाजों की सुरक्षित आवाजाही इस बात का संकेत है कि भारत अपने ऊर्जा हितों की रक्षा के लिए पूरी तरह सक्षम और सजग है। भारत ने न केवल अपने आर्थिक और रणनीतिक हितों की रक्षा की है, बल्कि धार्मिक संवेदनशीलता का

भी पूरा सम्मान किया है। खाड़ी क्षेत्र में तनाव के बावजूद भारतीय मुस्लिम समुदाय के लिए हज यात्रा को सुगम बनाने की दिशा में विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। यह भारत के बहुलतावादी समाज और संवैधानिक मूल्यों का परिचायक है, जहां सभी नागरिकों को समान अधिकार और सम्मान प्राप्त है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत ने स्पष्ट और संतुलित रुख अपनाया है। कई देशों द्वारा उठाए गए कदमों के बीच भारत ने अन्याय और अस्थिरता के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत केवल अपने हितों तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक शांति और न्याय के पक्ष में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। विश्लेषकों का मानना है कि वर्तमान संकट

ने भारत और पाकिस्तान की कूटनीतिक नीतियों के बीच अंतर को भी उजागर किया है। जहां भारत एक सुसंगत और संतुलित नीति के साथ वैश्विक मंच पर मजबूत स्थिति में नजर आता है, वहीं पाकिस्तान की नीतियां कई बार असंगत दिखाई देती हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो खाड़ी क्षेत्र का यह संकट भारत की विदेश नीति की परिपक्वता और प्रभावशीलता की परीक्षा रहा है, जिसमें भारत ने संतुलन, आत्मनिर्भरता और मानवीय मूल्यों पर आधारित दृष्टिकोण के साथ अपनी साख को और मजबूत किया है। भारत आज एक ऐसे राष्ट्र के रूप में उभर रहा है, जो अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के साथ-साथ वैश्विक शांति, स्थिरता और सहयोग को भी समान महत्व देता है।

मिडिल ईस्ट में तनाव बरकरार, समझौते की राह मुश्किल

डोनाल्ड ट्रंप की पहल के बावजूद अमेरिका और ईरान के बीच संभावित कूटनीतिक समझौते को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। एक ओर वॉशिंगटन बातचीत के जरिए तनाव कम करने का दावा कर रहा है, वहीं तेहरान इन दावों को खारिज करता नजर आ रहा है। दोनों देशों के बीच अविश्वास और विरोधाभासी बयानों ने किसी ठोस नतीजे की राह को मुश्किल बना दिया है।

मध्य-पूर्व में बढ़ते तनाव के बीच ट्रंप प्रशासन ईरान के साथ बातचीत के जरिए समाधान निकालने की कोशिश कर रहा है। हालांकि, ऋद्धहृद्धहृद्ध से बातचीत में इजरायल के तीन वरिष्ठ अधिकारियों ने इस पहल पर संदेह जताया है। अधिकारियों का कहना है कि अमेरिका जिन शर्तों के साथ आगे बढ़ रहा है, उन्हें स्वीकार करना ईरान के लिए आसान नहीं होगा।

रिपोर्ट के अनुसार, वॉशिंगटन और तेहरान के बीच खूफरवरी को वार्ता टूट गई थी, जिसके बाद अमेरिका और इजरायल ने ईरान के खिलाफ सैन्य अभियान शुरू



की चेतावनी के बाद अमेरिका को यह कदम उठाना पड़ा।

वहीं बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि ट्रंप मौजूदा सैन्य स्थिति को कूटनीतिक समझौते में बदलने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इजरायल की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। उन्होंने स्पष्ट किया कि क्षेत्रीय स्थिरता के साथ-साथ इजरायल के हितों की रक्षा सर्वोपरि है।

विश्लेषकों का मानना है कि अमेरिका और ईरान के बीच किसी भी संभावित समझौते में कई जटिल चुनौतियां सामने आएंगी। एक ओर अमेरिका क्षेत्र में स्थिरता चाहता है, वहीं दूसरी ओर इजरायल अपनी सुरक्षा को लेकर सतर्क है। ऐसे में दोनों के बीच संतुलन बनाना आसान नहीं होगा।

कुल मिलाकर, अमेरिका-ईरान संबंधों में कूटनीति और टकराव साथ-साथ चलते दिख रहे हैं। विरोधाभासी बयानों और आपसी अविश्वास के बीच फिलहाल यह कहना मुश्किल है कि दोनों देशों के बीच कोई ठोस समझौता हो पाएगा या नहीं।

किया। इस संघर्ष की जड़ में ईरान का परमाणु और बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम रहा है, जो लंबे समय से अंतर्राष्ट्रीय विवाद का विषय बना हुआ है। अनुमान है कि इस टकराव में अब तक बड़ी संख्या में लोगों की जान जा चुकी है, जिससे क्षेत्रीय अस्थिरता और बढ़ गई है।

इजरायली अधिकारियों का मानना है कि नई वार्ता में अमेरिका ईरान के परमाणु कार्यक्रम और मिसाइल क्षमता पर सख्त प्रतिबंध की मांग करेगा। ये मुद्दे दोनों देशों के बीच मुख्य विवाद का कारण रहे हैं। हालांकि, ट्रंप ने

हाल ही में अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'ट्रुथ सोशल' पर दावा किया कि अमेरिका और ईरान के बीच 'बेहद सकारात्मक और रचनात्मक संवाद' हुए हैं, जिनका उद्देश्य क्षेत्र में स्थायी शांति स्थापित करना है।

दूसरी ओर, ईरान ने इन दावों को सिरे से खारिज करते हुए कहा है कि ऐसी कोई औपचारिक बातचीत नहीं हुई। तेहरान का यह रुख दोनों देशों के बीच गहरे अविश्वास को दर्शाता है और किसी संभावित समझौते को लेकर संदेह और बढ़ाता है।

इसी बीच, ट्रंप ने कूटनीतिक

संकेत देते हुए ईरान के ऊर्जा ठिकानों पर प्रस्तावित हमलों को फिलहाल टालने का फैसला किया है। उन्होंने अमेरिकी रक्षा विभाग को पांच दिनों के लिए सभी सैन्य कार्रवाई रोकने का निर्देश दिया है। इस कदम को बातचीत के लिए माहौल बनाने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है।

हालांकि, काबुल स्थित ईरानी दूतावास ने इस फैसले को अमेरिकी दबाव में 'पीछे हटने' की कार्रवाई बताया है। ईरान का कहना है कि खाड़ी क्षेत्र में अपने इन्फ्रास्ट्रक्चर पर संभावित हमलों

NOTICE:

Times of Pedia does not guarantee, directly or indirectly, the quality or efficacy of any product or services described in the advertisements or other material which is commercial in nature in this Newspaper. Furthermore, Times of Pedia assumes no responsibility for the consequences attributable to inaccuracies or errors in the printing of any published material from the news agencies or articles contributed by readers. It is not necessary to agree with the views published in this Newspaper. All disputes to be settled in Delhi Courts only.

टेक्सास की तेल रिफाइनरी में भीषण धमाका, 'फ्यूल हब' में लगी आग

टेक्सास के पोर्ट आर्थर स्थित एक बड़ी तेल रिफाइनरी में भीषण आग लगने से हड़कंप मच गया। देर रात हुए जोरदार धमाके के बाद आग तेजी से फैल गई और आसमान में काले धुएं का घना गुबार छा गया। इस घटना से आसपास के इलाकों में दहशत का माहौल बन गया है। जानकारी के मुताबिक, यह हादसा वलेरो एनर्जी की रिफाइनरी में हुआ, जो अमेरिका के प्रमुख तेल प्रसंस्करण केंद्रों में से एक है। बताया जा रहा है कि रिफाइनरी के एक इंडस्ट्रियल हीटर में विस्फोट होने के बाद आग भड़क उठी। धमाके की तीव्रता इतनी ज्यादा थी कि इसकी आवाज दूर-दूर तक सुनी



गई। स्थानीय अधिकारियों के अनुसार, शाम करीब 6:30 बजे हुए इस धमाके की गूंज पोर्ट आर्थर के अलावा आसपास के शहरों—ग्रोव्स और नीदरलैंड—तक महसूस की गई। हादसे के बाद एहतियात के तौर पर प्रशासन ने कुछ इलाकों में 'शेल्टर-इन-प्लेस' का आदेश जारी किया है। लोगों से घरों के अंदर रहने,

खिड़कियां-दरवाजे बंद रखने और धुएं से बचाव के निर्देश दिए गए हैं।

फिलहाल इस घटना में किसी के हताहत होने या बड़े नुकसान की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। वहीं, कंपनी की ओर से भी अभी तक कोई विस्तृत बयान जारी नहीं किया गया है। मौके पर दमकल और आपातकालीन टीमें तैनात हैं, जो आग पर

काबू पाने में जुटी हुई हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह रिफाइनरी अमेरिका के गल्फ कोस्ट रिफाइनरिंग नेटवर्क का अहम हिस्सा है, जिसकी दैनिक क्षमता लगभग 3.8 लाख बैरल तेल प्रोसेस करने की है। ऐसे में यहां कामकाज प्रभावित होने से ईंधन आपूर्ति पर असर पड़ सकता है, जिसका प्रभाव स्थानीय ही नहीं बल्कि व्यापक स्तर पर भी देखने को मिल सकता है। फिलहाल स्थिति पर कड़ी नजर रखी जा रही है और आग बुझाने के प्रयास जारी हैं। प्रशासन ने लोगों से अफवाहों पर ध्यान न देने और केवल आधिकारिक जानकारी पर भरोसा करने की अपील की है।

Sufism in India: Spirituality, Politics, and Emerging Questions



Anzarul Bari

The history of Sufism in India is not merely a religious tradition, it represents a multi-dimensional civilizational and social movement. For centuries, it has fostered humanism, tolerance, and a shared cultural ethos, while playing a pivotal role in introducing Islam to the people of the sub-continent. However, in the contemporary era, Sufism has increasingly become the subject of critical debate — where its rich spiritual legacy coexists with growing concerns over exploitation, politicization, and ideological deviation.

Sufism in India is often traced back to the 12th century, with the arrival of Khwaja Moinuddin Chishti (R.A), who made Ajmer a center of spiritual dawah and reform. Following him, figures such as Hazrat Nizamuddin Auliya (R.A) and Baba Fariduddin Ganjshakar (R.A) established a profound spiritual and social order across the subcontinent. Their teachings transcended barriers of religion, language, and caste, promoting universal brotherhood and social harmony. Their khanqahs were not only centers of worship but also hubs of education, welfare, and humanitarian service.

Recent estimates suggest that India today hosts approximately 250,000 to 300,000 Sufi shrines and khanqahs. The Ajmer Dargah alone attracts between

8 to 10 million visitors and devotees annually, underscoring the enduring relevance of Sufism as a powerful spiritual and cultural force. Major shrines in cities such as Delhi, Bareilly, Gulbarga, Mumbai, Lucknow, Rurkee and Hyderabad continue to draw millions of devotees.

Before the partition of India, Sufism largely functioned as a non-political, reformist movement rooted in public service and spirituality. Sufi saints generally maintained a distance from ruling elites, focusing instead on moral guidance and community welfare. The life of Hazrat Nizamuddin Auliya (R.A) exemplifies this ethos — he deliberately avoided proximity to political authority, prioritizing service to humanity. The core objective of Sufism during this period was to unite hearts and foster social cohesion.

However, post-1947 transformations — marked by the emergence of nation-states, identity politics, and institutional restructuring — have significantly impacted the Sufi tradition. While many shrines have preserved their spiritual integrity, others have experienced increasing centralization of authority, hereditary control, and administrative complexities. One of the most pressing issues today is the lack of

financial transparency within many khanqahs. Various reports and observations indicate that the use of donations and offerings at several major shrines has come under scrutiny. In some cases, annual revenues reach millions of rupees, yet allegations persist regarding limited spending on public welfare and lack of accountability. Audit findings associated with waqf institutions have further highlighted irregularities, pointing to systemic concerns.

Spiritual exploitation has also emerged as a critical issue. At certain shrines, devotees are reportedly pressured into paying excessive amounts under the guise of rituals, amulets, and spiritual services. Such practices undermine the foundational principles of Sufism — simplicity, sincerity, and selflessness — leading particularly the younger generation to question its authenticity.

On the political front, Sufism has entered a new and complex phase. Some prominent Sufi figures and institutions have developed visible associations with organizations such as the RSS and political parties like the BJP. While some interpret these engagements as efforts toward interfaith dialogue and national integration, critics argue that they represent the instrumentalization of Sufism for political

gains. This raises concerns about the erosion of its traditionally apolitical and spiritual character.

The socio-political climate in India, particularly after events like the demolition of the Babri Masjid, has further intensified religious polarization. In such an environment, the role of Sufi institutions becomes even more sensitive. If they are able to maintain autonomy and adhere to their spiritual principles, they can play a crucial role in promoting peace, tolerance, and social harmony.

Historically, the methodology of Sufism has been rooted in ethical conduct, love, and exemplary personal character. Sufi saints influenced society not through coercion, but through lived example. They communicated in local languages and prioritized service to the marginalized — qualities that made Sufism a deeply accessible and impactful movement.

A comparative reflection on the past and present reveals a significant shift. Where Sufism was once centered on spirituality and service, institutional and financial concerns have now become dominant in many places. Earlier, Sufi saints distanced themselves from political authority; today, many institutions appear increasingly aligned with it. Similarly, simplicity and as-

ceticism have, in some cases, been replaced by material display.

Despite these challenges, the relevance of Sufism has not diminished — if anything, it has grown more urgent. In a world increasingly marked by religious extremism and social fragmentation, Sufism offers a compelling spiritual alternative rooted in compassion, coexistence, and humanity.

Scholars closely observing Sufism emphasize the need for reform. This includes ensuring financial transparency, strengthening accountability mechanisms, restoring the authentic spirit of Sufi teachings, and exercising caution in political engagements. Additionally, expanding the role of Sufi institutions in education, healthcare, and social welfare can help them fulfill their historical responsibilities more effectively.

In conclusion, Sufism in India remains a living and dynamic tradition, yet it stands at a critical crossroads. If it is revitalized in accordance with its foundational values — love, service, and sincerity — it can continue to serve as a powerful force for positive transformation, not only in India but across the world. However, if it succumbs to political manipulation, financial irregularities, and ideological distortion, its spiritual essence risks being significantly diminished.

India: Freedom of Religion undermined by Sectarian Politics



Prof. Ram Puniyani

As India embraced the path of secularism and democracy with Independence, there were still some forces which were opposed to these values and harped on India being a nation for Hindus only. This organization, the R.S.S. as it has completed its one hundred years of its existence, through its dogged work in spreading its narrative, has reached the peak during the last few decades. Its ideology of 'Hate minorities' has consistently demonized Muslims right from the beginning and Christians from the last few decades. The result has been that 'freedom of Religion' has gone into a free fall and the atrocities on religious minorities have gone up exponentially. Phenomenon of hate is going through the roof from the last decade or so as the Hindu Nationalist Government is in power and the mischief mongers now know that they can get away without any punishment, rather their acts of violence will be duly rewarded by the ruling Government.

With this the propaganda against religious minorities and vast network of hate spreaders has become the 'social common sense', very difficult to combat. And consequently, we have seen a continuous rise of the marginalization of these religious minorities. This is accompanied by the de-

cline in the global indices of India, pertaining to freedom of religion, freedom of expression, hunger index and most other assessments related to India's social and political freedom.

This gets reflected aptly in many of the reports related to lives of Indian minorities not done by Indian but also of global agencies. One such agency is USCIRF. USCIRF is an independent, bipartisan federal body established under the 'International Religious Freedom Act of 1998' to monitor global conditions of religious freedom or belief, review violations, and provide policy recommendations to the U.S. President, Secretary of State, and Congress. It releases its reports every year reflecting on the minorities of various countries. Last seven odd years it has been labelling India as a 'country of particular concern'. Its report this year is very disturbing as it has called India not only the country of particular concern but has also asked for a ban on RSS and its affiliated organizations.

The report says that RSS as the body being responsible for the worsening intercommunity scenario and the intimidation of religious minorities. As per the report, "The Rashtriya Swayamsevak Sangh should face targeted sanctions for its responsibility for and tolerance of violations of religious freedom in India. This US panel has made rec-

ommendations to the Donald Trump administration. The sanctions could include freezing the organisation's assets and barring entry to the US." In India specific report it points out that RSS is the parent organization of the ruling BJP, under whose rule. "... the commission had noted that the "interconnected relationship between the RSS and BJP allows for the creation and enforcement of several discriminatory pieces of legislation, including citizenship, anti-conversion and cow slaughter laws".

The spokesman of the External affairs ministry has rejected the report as biased and rejected it. The main opposition party the Indian national Congress in a tweet has stated that "The US Should impose a ban on RSS. This recommendation was made to the Donald Trump administration by the USCIRF, an official US government body. The USCIRF has warned that the RSS (Rashtriya Swayamsevak Sangh) poses a threat to people's religious freedom. Its recommendations are clear, Ban the RSS immediately. Seize its assets. Prohibit entry into the US for RSS members."

US based 'Hindus for human rights' has been opposing the politics of RSS combine in a very serious way. They agree with the Commission's recommendations. The report underlines most of the policies of BJP which has tormented

the Indian minorities. We know here the violence against these sections of society is becoming more widespread. Though the ghastly violence of the type of Gujarat is not there we observe that it is occurring on regular manner in a lynching or other acts of violence here and there. The attacks on prayer meetings take place on a regular basis. What happened on the occasion of Christmas 2025 by Bajrang Dal activists was a new low in the violence. It also mentions the move of Central Government in disenfranchising the Muslims through NRC-CAA. It reported the abandoning of over 50 Rohingyas of which around 14 were Christians; in the high seas. The dastardly imprisonment of Umar Khalid and Sharjil Imam, who are in the prison for over five years, without any trial reflects the status of the justice delivery system. The Cow, love jihad and jihad of various types remains its core method of targeting the Muslim minorities.

The Freedom of religion acts, basically to prevent conversions by those who wish to convert are prevalent in nearly 11 states and now Maharashtra is the new one to join this list. While conversion to Islam and Christianity is a pretext to beat up some, there is an open call for conversion to Hinduism by a phenomenon called 'Ghaar Vapasi'. This is a clever move to impose

Hinduism on those who belong to other religions.

The USCIRF is calling for the need for such a strong move now. The first person to realise and ban this organization was India's first Home Minister and Deputy prime Minister Sardar Patel himself. A communique of the Ministry of Home affairs stated, 'The objectionable and harmful activities of the Sangh have, however, continued unabated and the cult of violence sponsored and inspired by the activities of the Sangh has claimed many victims. The latest and the most precious to fall was Gandhiji himself.'

RSS was banned yet again in 1975 during Emergency imposed by Indira Gandhi and then in 1992 after demolition of Babri Mosque by the kar seva called by BJP. Today its activities of spreading hate are qualitatively and quantitatively at much worse level. While within the country most people feel the pinch of the atmosphere where democratic norms are being stifled, the USCIRF has put the hammer on the head of the nail to underline the impact of this organization calling for Hindu Rashtra. It has already spread its wings in many a country with innumerable organizations affiliated/associated with it.

Now the ball is on the American Presidents table. But of course, he has his own weird ways of working.

Jamaat-e-Islami Hind, President, Syed Sadatullah Husaini Extends Eid-ul-Fitr Greetings, Emphasises Quranic Message of Justice, Unity and Peace

New Delhi: The President of Jamaat-e-Islami Hind (JIH), Syed Sadatullah Husaini has extended heartfelt Eid ul-Fitr greetings to all Muslims, and to all brothers and sisters living in this country.

In a statement to the media, the JIH President said, "Eid ul-Fitr is a celebration of the Quran. It is a celebration of the revelation of the Holy Quran, of our bond and connection with it, and of our efforts to act upon its teachings. It is an occasion to express gratitude and joy for the book of guidance and direction bestowed upon us by Allah. The command to rejoice over the great blessing of the Holy Quran has been given by Allah Himself. "O mankind! there hath come to you a direction from

your Lord and a healing for the diseases in your hearts, and for those who believe, a guidance and a Mercy. O Prophet, say: In the bounty of Allah and in His Mercy, in that let them rejoice: that is better than the wealth they hoard. (Quran 10 - 57,58)"

Syed Sadatullah Husaini stated that Allah Almighty revealed the Holy Quran in the blessed month of Ramadan, and has designated this month as a special training period for acting upon the teachings of the Quran. Muslims recite the Quran abundantly during this month. They stand for hours in night prayers and listen to the entire Quran being recited. Through fasting, they cultivate piety, will-power, and self-restraint, which are essential



for putting the teachings of the Quran into practice. Eid ul-Fitr is the celebration of the completion of this unique one-month training course and the day of pledging to adopt its blessings in practical life.

The President of Jamaat-e-Islami Hind said "It is important that while celebrating Eid, this philosophy of Eid and Ramadan be kept in mind. Ramadan trains us on three dimensions. On one hand, we endure the hardship of hunger and

thirst solely for Allah's sake and nurture devotion and submission before His commands. On the other hand, we train our inner self and develop the capacity for self-restraint, keeping our desires in check and controlling our emotions; and through acts of charity in Ramadan, we become sensitised to our responsibilities towards Allah's other servants. Even on the day of Eid, through Sadaqah al-Fitr, we ensure that no member of society is deprived of the joys of Eid."

Syed Sadatullah Husaini further stated, "We are celebrating Eid ul-Fitr at a time when the Muslim world is passing through a period of severe trials and uncertainty, and a devastating war has been imposed upon the world. We salute the

courage and steadfastness and pray for the success for those who stand firm against oppression, tyranny, and colonialism, and who resist colonial powers while representing the weak and oppressed nations. We pray for the unity, solidarity, and mutual harmony of the entire Muslim Ummah, and hope that this tension will soon end and a new era of lasting peace and security will begin in the region. We pray for the progress, prosperity, and peace of our country and its people. We extend Eid greetings to brothers and sisters from various sects and religions and appeal: let us all come together to spread an atmosphere of peace, justice, and fairness in this country, and collectively strive to resolve its real problems"

SUBSCRIPTION FORM TIMES OF PEDIA

Issue	Subscription Price	Years
52	250/-	1
104	500/-	2
260	1,300/-	5
520	2,600/-	10
--	5,000/-	Life

Name :.....
Address :.....
.....
Email:.....
Contact Phone No.....
for donation /life /10 yrs /5 yrs subscription
The sum of Rupees..... (Rs...../-)
through cheque/DD No.....dt.....

Fill the above form neatly in capital letters and send it to us on the following address :
Times of Pedia, K-2-A-001, Abul Fazal Enclave-I,
Jamia Nagar, Okhla, New Delhi-110025
or email : timesofpedia@gmail.com

Also Send us your subscription, membership, donation amount in favour of Times of Pedia, New Delhi
Punjab National Bank, Nanak Pura Branch,
New Delhi-110021
A/C No.1537002100017151, IFS Code : PUNB 0153700

“First, they ignore you, then they laugh at you, then they fight you and then you win.”
- Mahatma Gandhi

ADVERTISEMENT TARIFF TIMES OF PEDIA

Size/Insertion Single	B&W (Rs)	4 Colour (Rs)
Full Page (23.5 x 36.5 cm)	30,000/-	1,00,000/-
A4 (18.7 x 26.5 cm)	20,000/-	60,000/-
Half Page (Tall-11.6 x 36.5 cm)	18,000/-	50,000/-
Half Page (wide-23.5 x 18 cm)	8,000/-	50,000/-
Quarter Page (11.6 x 18 cm)	10,000/-	28,000/-
Visiting Card size (9.5 x 5.8 cm)	3,000/-	10,000/-

MECHANICAL DATA:
Language: English, Hindi and Urdu
Printing: Front and Back - 4 Colours , Inside pages - B&W
No. of Pages: 12 pages (more in future)
Price: Rs. 3/-
Print order: 25,000
Periodicity: Weekly
Material details: Positives/Format of your advertisements should reach us 10 days before printing.
 Note: 50% extra for back page, 100% extra for front page
 Please Add Rs. 10 for outstation cheques.
 50% advance of total add cost would be highly appreciable, in case of one year continue add. Publication cost will reduce 50% of actual cost.

Bank transactions details of TIMES OF PEDIA
 Send your subscriptions/memberships/donations etc.
 (Cheques/DD) in favour of TIMES OF PEDIA New Delhi
 Punjab National Bank, Nanak Pura Branch , New Delhi-110021
 A/C No.1537002100017151, IFS Code : PUNB 0153700

कुदरती निखार के लिए चुकंदर आइस क्यूब्स: घर बैठे पाएं ग्लोइंग स्किन

आज के दौर में हर कोई साफ, चमकदार और हेल्दी स्किन चाहता है। इसके लिए लोग महंगे ब्यूटी प्रोडक्ट्स और पार्लर ट्रीटमेंट्स का सहारा लेते हैं, लेकिन कई बार इनके साइड इफेक्ट्स भी सामने आ जाते हैं। ऐसे में नेचुरल उपाय एक बेहतर और सुरक्षित विकल्प बनकर उभर रहे हैं। इन्हीं घरेलू उपायों में चुकंदर से बने आइस क्यूब्स इन दिनों खासे लोकप्रिय हो रहे हैं, जो स्किन को कुदरती निखार देने में मददगार माने जा रहे हैं।

चुकंदर न सिर्फ सेहत के लिए फायदेमंद है, बल्कि त्वचा के लिए भी बेहद लाभकारी होता है। इसमें मौजूद विटामिन C, एंटीऑक्सीडेंट और एंटीबैक्टीरियल गुण त्वचा की गहराई से सफाई करते हैं और उसे हेल्दी बनाए रखते



हैं। यह पिगमेंटेशन को कम करने, पिंपल्स को नियंत्रित करने और स्किन टेक्सचर को बेहतर बनाने में सहायक होता है। नियमित उपयोग से त्वचा साफ, मुलायम और चमकदार नजर आती है।

विशेषज्ञों के अनुसार, चुकंदर से बने आइस क्यूब्स स्किन को तुरंत फ्रेशनेस देने के साथ-साथ ब्लड सर्कुलेशन भी बेहतर करते हैं। इन्हें बनाना भी बेहद आसान है। सबसे पहले चुकंदर और गाजर को छीलकर कट्टकस कर लें। इसके बाद इन्हें मिक्सर में थोड़ा पानी डालकर

पीस लें और जूस को छान लें। इस जूस को आइस ट्रे में डालकर फ्रीजर में जमा दें। तैयार क्यूब्स को रात में सोने से पहले चेहरे और गर्दन पर हल्के हाथों से मसाज करें।

इसके अलावा, चुकंदर, दूध और गुलाब जल का मिश्रण भी त्वचा के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। इसे बनाने के लिए कट्टकस किए हुए चुकंदर में तीन बड़े चम्मच दूध और दो बड़े चम्मच गुलाब जल मिलाएं। इस मिश्रण को छानकर आइस ट्रे में जमा लें। यह क्यूब्स त्वचा को माइक्रोइज करने

के साथ उसे सॉफ्ट और फ्रेश बनाते हैं एक अन्य उपाय में चुकंदर के रस के साथ चावल का पानी मिलाकर आइस क्यूब्स तैयार किए जाते हैं। चावल का पानी स्किन को टाइट करने और चमक बढ़ाने में मदद करता है। दोनों को मिलाकर फ्रीजर में जमा लें और चेहरे पर हल्के हाथ से लगाएं। इससे त्वचा में निखार आता है और वह अधिक ग्लोइंग नजर आती है। हालांकि, किसी भी घरेलू उपाय को अपनाने से पहले स्किन टाइप के अनुसार सावधानी बरतना जरूरी है। यदि त्वचा संवेदनशील है तो पहले पैच टेस्ट करना बेहतर होता है। कुल मिलाकर, चुकंदर आइस क्यूब्स एक आसान, सस्ता और असरदार घरेलू उपाय है, जिसे अपनाकर बिना किसी केमिकल के त्वचा को कुदरती निखार दिया जा सकता है।

शाम के नाश्ते में बनाएं हरी मूंग की टेस्टी कटलेट

भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग अब स्वाद के साथ-साथ सेहत का भी खास ध्यान रखने लगे हैं। खासकर शाम के समय हल्की भूख लगने पर अक्सर यह सवाल उठता है कि ऐसा क्या खाया जाए जो स्वादिष्ट भी हो और शरीर के लिए फायदेमंद भी। ऐसे में हरी मूंग की कटलेट एक बेहतरीन विकल्प बनकर उभर रही है। यह न केवल खाने में टेस्टी होती है, बल्कि पोषण से भी भरपूर होती है।

हरी मूंग दाल को प्रोटीन का अच्छा स्रोत माना जाता है। इसमें फाइबर, विटामिन और मिनरल्स भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो शरीर को ऊर्जा देने के साथ-साथ पाचन तंत्र को भी मजबूत बनाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, नियमित रूप से हरी मूंग का सेवन करने से वजन नियंत्रित रखने और शरीर को फिट बनाए रखने में मदद मिलती है। ऐसे में इससे बनी कटलेट स्वाद और सेहत का बेहतरीन मेल साबित होती है।

हरी मूंग की कटलेट बनाना बेहद आसान है और इसे कम समय में तैयार किया जा सकता है। इसे बनाने के लिए सबसे



पहले हरी मूंग को कुछ घंटों के लिए भिगोकर रख लें। इसके बाद इसे हल्का उबाल लें या दरदरा पीस लें। अब इसमें भीगा हुआ पोहा, बारीक कटा हुआ प्याज, हरी मिर्च, अदरक, हरा धनिया और स्वादानुसार नमक व मसाले मिलाएं। मिश्रण को अच्छी तरह से गूँथकर छोटे-छोटे टिककी के आकार में तैयार कर लें।

इसके बाद एक नॉन-स्टिक पैन या तवे पर थोड़ा सा तेल गर्म करें और तैयार टिककियों को हल्की आंच पर दोनों तरफ से सुनहरा होने तक सेकें। चाहें तो इन्हें डीप फ्राई भी किया जा सकता है, लेकिन हेल्दी

विकल्प के लिए कम तेल में सेकना बेहतर माना जाता है। तैयार कटलेट को हरी चटनी या टमाटर सॉस के साथ परोसें।

यह कटलेट बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी को पसंद आती है। खास बात यह है कि इसे टिफिन में भी आसानी से पैक किया जा सकता है। वहीं, घर आए मेहमानों के लिए भी यह एक बढ़िया स्नैक विकल्प साबित हो सकती है। स्वाद के मामले में यह पारंपरिक समोसा और कचौड़ी को भी पीछे छोड़ देती है, क्योंकि इसमें मसालों का संतुलित स्वाद और हल्कापन दोनों मौजूद होते हैं।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना

है कि तली-भुनी चीजों की तुलना में ऐसे हेल्दी स्नैक्स का सेवन करना बेहतर होता है। हरी मूंग की कटलेट में तेल की मात्रा कम होती है, जिससे यह दिल और पाचन के लिए भी लाभकारी मानी जाती है। साथ ही, इसमें मौजूद पोषक तत्व शरीर को लंबे समय तक ऊर्जा प्रदान करते हैं।

यदि आप अपने रोजमर्रा के खानपान में कुछ नया और पौष्टिक शामिल करना चाहते हैं, तो हरी मूंग की कटलेट एक शानदार विकल्प हो सकती है। इसे बनाना आसान है, स्वाद लाजवाब है और सेहत के लिए भी फायदेमंद है।

खेल समाचार

13,600 करोड़ में बिकी राजस्थान रॉयल्स, अमेरिकी कारोबारी के हाथों आई मालिकाना हक; सैम करन बाहर, दासुन शनाका शामिल



नई दिल्ली: इंडियन प्रीमियर लीग के 19 वें सत्र से पहले एक बड़ी कारोबारी खबर सामने आई है। राजस्थान रॉयल्स का मालिकाना हक अब अमेरिकी कारोबारी काल सोमानी के समूह ने खरीद लिया है। यह सौदा करीब 1.63 अरब डॉलर (लगभग 13,600 करोड़ रुपये) में हुआ है, जिसके साथ राजस्थान रॉयल्स दुनिया की सबसे महंगी फ्रेंचाइजी बन गई है।

जानकारी के अनुसार, इस समूह को अमेरिकी उद्योगपति रॉब वाल्टन का भी समर्थन प्राप्त है, जो वॉलमार्ट परिवार से जुड़े हैं। इसके अलावा, डेट्रॉइट लायंस टीम से जुड़ा हैम्प परिवार भी इसमें शामिल है। हालांकि, इस नई मालिकाना व्यवस्था का प्रभाव वर्ष 2026 के बाद ही लागू होगा और फिलहाल टीम अपनी तैयारियों में जुटी हुई है।

राजस्थान रॉयल्स ने लीग के पहले ही सत्र (2008) में शेन वॉर्न की कप्तानी में खिताब जीता था, लेकिन

इसके बाद टीम को उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ा। वर्ष 2022 में टीम फाइनल तक पहुंची, जहां उसे हार का सामना करना पड़ा।

इसी बीच टीम को एक बड़ा झटका भी लगा है। इंग्लैंड के हरफनमौला खिलाड़ी सैम करन चोट के कारण पूरे सत्र से बाहर हो गए हैं। उनकी जगह श्रीलंका के टी20 कप्तान दासुन शनाका को 2 करोड़ रुपये में टीम में शामिल किया गया है।

टीम के क्रिकेट निदेशक और मुख्य प्रशिक्षक कुमार संगकारा ने कहा कि सैम करन जैसे खिलाड़ी का बाहर होना निश्चित रूप से नुकसान है, लेकिन शनाका टीम के संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

राजस्थान रॉयल्स इस सत्र में अपना पहला मुकाबला 30 मार्च को गुवाहाटी में चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ खेलेगी। नए कप्तान रियान पराग के नेतृत्व में टीम बेहतर प्रदर्शन के लिए पूरी तरह तैयार है।

पीएसएल खेलने पाकिस्तान जाएंगे बांग्लादेशी खिलाड़ी, सुरक्षा आश्वासन के बाद मिली मंजूरी

ढाका/कराची: सुरक्षा चिंताओं के बीच बांग्लादेश सरकार ने अपने क्रिकेट खिलाड़ियों को पाकिस्तान सुपर लीग 2026 में भाग लेने की अनुमति दे दी है। यह निर्णय विदेश मंत्रालय और इस्लामाबाद स्थित बांग्लादेश उच्चायोग से सुरक्षा संबंधी भरोसा मिलने के बाद लिया गया।

पहले बांग्लादेश सरकार ने स्पष्ट किया था कि यदि सुरक्षा स्थिति संतोषजनक नहीं रही तो खिलाड़ियों को अनुमति नहीं दी जाएगी, लेकिन बाद में उच्चायोग की रिपोर्ट के आधार पर

निर्णय बदल दिया गया। बताया गया है कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच ईद-उल-अजहा से पहले युद्धविराम की घोषणा की गई है, जिससे हालात कुछ हद तक सामान्य हुए हैं।

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए प्रतियोगिता को सीमित दायरे में आयोजित करने का निर्णय लिया है। सभी मुकाबले कराची और लाहौर में खेले जाएंगे और शुरुआती मैच बिना दर्शकों के आयोजित किए जाएंगे, ताकि सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके।

عید الفطر: بندگی کی تکمیل، شعور کی آزمائش اور موجودہ حالات میں حکمت عمل

سادگی اور حکمت کے ساتھ زندہ رکھنا ہے۔ یہی وہ راستہ ہے جو ہمیں عزت بھی دے سکتا ہے اور تحفظ بھی فراہم کر سکتا ہے۔ اس کے ساتھ ساتھ ہمیں اپنے معاشرے کے کمزور طبقات کو بھی نظر انداز نہیں کرنا چاہیے۔ عید کا حقیقی حسن اسی وقت ظاہر ہوتا ہے جب خوشی سب کے درمیان تقسیم ہو۔ اگر ہمارے آس پاس کوئی ضرورت مند ہے اور ہم اس کی مدد نہیں کرتے تو ہماری خوشی ادھوری رہ جاتی ہے۔ اس لیے ہمیں چاہیے کہ ہم اپنی استطاعت کے مطابق دوسروں کا سہارا بنیں، کیونکہ یہی وہ عمل ہے جو ہمیں ایک مضبوط اور متحد قوم بنا سکتا ہے۔ نوجوان نسل کے لیے یہ وقت خاص طور پر اہم ہے۔ انہیں یہ سمجھنا ہوگا کہ جذباتی نعروں اور وقتی جوش سے کچھ حاصل نہیں ہوتا۔ اصل کامیابی علم، کردار اور شہرت سوچ میں ہے۔ اگر نوجوان اپنے آپ کو ان اصولوں پر استوار کر لیں تو نہ صرف وہ خود کامیاب ہوں گے بلکہ پوری قوم کے لیے ایک مضبوط بنیاد بن سکتے ہیں۔

آخر کار، ہمیں یہ یقین رکھنا ہوگا کہ حالات ہمیشہ ایک جیسے نہیں رہتے۔ مشکل وقت آتا ہے اور کڑی جاتی ہے، لیکن جو چیز باقی رہتی ہے وہ انسان کا کردار اور اس کا رویہ ہوتا ہے۔ اگر ہم نے صبر، حکمت اور استقامت کو اپنا لیا تو کوئی بھی مشکل ہمیں شکست نہیں دے سکتی۔ عید الفطر ہمیں یہی امید دیتی ہے کہ اندھیرا کتنا ہی گہرا کیوں نہ ہو، روشنی اپنی جگہ بنا لیتی ہے۔ لہذا ضرورت اس بات کی ہے کہ ہم اس موقع کو سنجیدگی سے لیں، اپنے اندر مثبت تبدیلی پیدا کریں، اور ایک ایسی سوچ کے ساتھ آگے بڑھیں جو نہ صرف ہمارے لیے بلکہ پورے معاشرے کے لیے فائدہ مند ہو۔ یہی طرز عمل ہمیں موجودہ حالات میں محفوظ بھی رکھ سکتا ہے اور ایک بہتر مستقبل کی طرف لے جا سکتا ہے۔

ہمیں یاد دلاتی ہے کہ مشکلات کتنی ہی بڑی کیوں نہ ہوں، اگر انسان اپنے رب سے جزا رہے تو وہ کبھی تنہا نہیں ہوتا۔ آج اگر ہمیں یہ محسوس ہوتا ہے کہ حالات ہمارے خلاف ہیں تو ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہیے کہ اللہ کی مدد ہمیشہ صبر کرنے والوں کے ساتھ ہوتی ہے۔ موجودہ حالات میں جب ہم عید الفطر جیسے مبارک موقع پر کھڑے ہیں تو ہمیں یہ سمجھنا ہوگا کہ یہ محض خوشی منانے کا دن نہیں بلکہ اپنے طرز فکر اور طرز عمل کا ازسرنو جائزہ لینے کا بھی موقع ہے۔ وقت نے ہمیں ایک ایسی کیفیت سے دوچار کر دیا ہے جہاں جذباتی رد عمل کے بجائے سنجیدگی، تدبیر اور حکمت کی ضرورت پہلے سے نہیں زیادہ بڑھ چکی ہے۔ اگر ہم نے اس موقع کو صرف رسمی خوشیوں تک محدود کر دیا تو ہم اس کے اصل پیغام سے محروم رہ جائیں گے۔ آج کا سب سے بڑا تقاضا یہ

عبادت کو مکمل کرتے ہیں بلکہ ایک مضبوط اور متحد معاشرہ بھی تشکیل دیتے ہیں۔ میں خاص طور پر نوجوانوں سے کہنا چاہوں گا کہ وہ جذبات کے بجائے شعور کو اپنا رہنما بنائیں۔ آج کا دور نعرے بازی کا نہیں بلکہ حکمت اور تدبیر کا ہے۔ اگر ہم نے اپنے جذبات کو قابو میں نہ رکھا تو ہم خود بھی نقصان اٹھائیں گے اور اپنی آنے والی نسلوں کے لیے بھی مشکلات پیدا کریں گے۔ تعلیم، کردار اور مثبت سوچ ہی وہ راستہ ہے جو ہمیں اس آزمائش سے نکال سکتا ہے۔

عید الفطر ہمیں امید کا پیغام دیتی ہے۔ یہ



گیسٹ کالم

مولانا قاری اسحاق گورا

ہمیں یاد دلاتی ہے کہ مشکلات کتنی ہی بڑی کیوں نہ ہوں، اگر انسان اپنے رب سے جزا رہے تو وہ کبھی تنہا نہیں ہوتا۔ آج اگر ہمیں یہ محسوس ہوتا ہے کہ حالات ہمارے خلاف ہیں تو ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہیے کہ اللہ کی مدد ہمیشہ صبر کرنے والوں کے ساتھ ہوتی ہے۔ موجودہ حالات میں جب ہم عید الفطر جیسے مبارک موقع پر کھڑے ہیں تو ہمیں یہ سمجھنا ہوگا کہ یہ محض خوشی منانے کا دن نہیں بلکہ اپنے طرز فکر اور طرز عمل کا ازسرنو جائزہ لینے کا بھی موقع ہے۔ وقت نے ہمیں ایک ایسی کیفیت سے دوچار کر دیا ہے جہاں جذباتی رد عمل کے بجائے سنجیدگی، تدبیر اور حکمت کی ضرورت پہلے سے نہیں زیادہ بڑھ چکی ہے۔ اگر ہم نے اس موقع کو صرف رسمی خوشیوں تک محدود کر دیا تو ہم اس کے اصل پیغام سے محروم رہ جائیں گے۔ آج کا سب سے بڑا تقاضا یہ

منانا چاہیے کہ اس سے کسی کو تکلیف نہ پہنچے، کسی کے جذبات مجروح نہ ہوں، اور کسی کو یہ موقع نہ ملے کہ وہ ہمارے خلاف کوئی منفی تاثر قائم کرے۔ یہ صرف ایک سماجی ضرورت نہیں بلکہ ایک دینی تقاضا بھی ہے۔ سوشل میڈیا کے اس دور میں ہماری ذمہ داری اور بھاری ذمہ داری ہے۔ ایک غلط پیغام، ایک غیر ذمہ دارانہ پوسٹ، یا ایک جذباتی تبصرہ نہ صرف ہمیں بلکہ پوری کمیونٹی کو مشکل میں ڈال سکتا ہے۔ اس لیے ضروری ہے کہ ہم اپنے الفاظ اور اپنے رویے پر مکمل کنٹرول رکھیں۔ عید کے موقع

پر ہمیں ایسے پیغامات کو فروغ دینا چاہیے جو محبت، بھائی چارے اور امن کا پیغام دیں۔ یہ بھی حقیقت ہے کہ موجودہ حالات میں ہمیں اپنی شناخت کے حوالے سے بھی محتاط رہنا ہوگا۔ لیکن اس احتیاط کا مطلب یہ نہیں کہ ہم اپنے دین سے پیچھے ہٹ جائیں یا اپنی پہچان کو منادیں۔ بلکہ اس کا مطلب یہ ہے کہ ہم اپنی شناخت کو وقار، سادگی اور حکمت کے ساتھ پیش کریں۔ یہی وہ راستہ ہے جو ہمیں عزت بھی دے سکتا ہے اور تحفظ بھی۔

عید الفطر کا ایک بنیادی پیغام یہ بھی ہے کہ ہم اپنے معاشرے کے کمزور طبقے کو نہ بھولیں۔ آج جب معاشی حالات مشکل ہیں، بہت سے لوگ بنیادی ضروریات سے محروم ہیں، تو ہماری ذمہ داری ہے کہ ہم ان کا سہارا بنیں۔ زکوٰۃ، صدقات اور دیگر فلاحی کاموں کے ذریعے ہم نہ صرف اپنی

صورت اختیار کر چکی ہے۔ یہ کہنا کہ قانون سب کے لیے برابر ہے، ایک اصولی بات ہے، لیکن عملی میدان میں جو کچھ دکھائی دیتا ہے، وہ ہمیں سوچنے پر مجبور کرتا ہے۔ ایسا محسوس ہوتا ہے کہ بعض مواقع پر قانون کی سختی کا رخ ایک خاص طبقے کی طرف زیادہ ہوتا ہے، اور یہی احساس ہمارے اندر ایک اضطراب پیدا کرتا ہے۔ لیکن یہاں ہمیں رک کر سوچنا ہوگا۔ کیا ہمارا رد عمل اس اضطراب کے مطابق ہونا چاہیے، یا ہمیں اس سے بلند ہو کر کوئی ایسا راستہ اختیار کرنا چاہیے جو نہ صرف ہمیں محفوظ رکھے بلکہ ہمارے دین کی تعلیمات کے بھی عین مطابق ہو؟ اسلام ہمیں ہر حال میں توازن اور حکمت کا درس دیتا ہے۔ یہی وہ نقطہ ہے جسے آج سب سے زیادہ سمجھنے کی ضرورت ہے۔

عید الفطر ہمیں یہ سبق دیتی ہے کہ خوشی کے مواقع پر بھی ذمہ داری کو فراموش نہیں کیا جا سکتا۔ آج اگر حالات حساس ہیں تو ہمیں اپنی خوشیوں کے اظہار میں بھی احتیاط برتنی ہوگی۔ ہمیں یہ دیکھنا ہوگا کہ ہمارا ہر عمل نہ صرف شرعی اصولوں کے مطابق ہو بلکہ ملکی قوانین کے دائرے میں بھی ہو۔ کیونکہ ایک معمولی سی لغزش بھی ایسے حالات میں بڑے مسائل کو جنم دے سکتی ہے۔

ہمیں یہ بات بھی ذہن میں رکھنی چاہیے کہ اسلام نے ہمیں فساد سے بچنے کی تعلیم دی ہے۔ قرآن کریم بار بار ہمیں صبر اور حکمت کی تلقین کرتا ہے۔ نبی کریم ﷺ کی سیرت ہمارے سامنے ایک روشن مثال ہے کہ مشکل ترین حالات میں بھی آپ نے صبر، برداشت اور دانائی کا درس نہیں چھوڑا۔ آج اگر ہمیں اپنے حالات کا سامنا کرنا ہے تو ہمیں اسی سونے کو اپنانا ہوگا۔ عید کے موقع پر ایک اور اہم پہلو جس پر توجہ دینے کی ضرورت ہے، وہ ہے ہمارا اجتماعی رویہ۔ ہمیں اپنی خوشیوں کو اس انداز میں

رمضان المبارک جب اپنے اختتام کو پہنچتا ہے تو فضا میں ایک عجیب سی کیفیت پیدا ہو جاتی ہے۔ ایک طرف دل اس مہینے کی جدائی پر افسردہ ہوتا ہے اور دوسری طرف عید الفطر کی خوشی دستک دیتی ہے۔ یہ وہ لمحہ ہوتا ہے جب ایک مومن اپنے اندر جھانک کر دیکھتا ہے کہ اس نے اس مہینے میں کیا پایا اور کیا کھویا۔ عید الفطر دراصل اسی احتساب کا نام ہے، محض ایک تہوار نہیں بلکہ ایک شعوری اعلان ہے کہ بندہ اپنے رب کے سامنے جھکا، اس نے اپنی خواہشات کو قربان کیا، اور اب وہ اس بندگی کی تکمیل پر خوشی منا رہا ہے۔

اسلام نے عید کو جس انداز میں پیش کیا ہے، وہ دیگر تہواروں سے یکسر مختلف ہے۔ یہاں خوشی کا تعلق محض دنیاوی اسباب سے نہیں بلکہ روحانی کامیابی سے ہے۔ ایک مہینہ بھوک و پیاس برداشت کرنے کے بعد، راتوں کو جاگ کر عبادت کرنے کے بعد، اور اپنی زبان، آنکھ اور دل کو قابو میں رکھنے کے بعد جب بندہ عید کی صبح اٹھتا ہے تو دراصل وہ اپنے رب کی رمتوں کا مستحق بن چکا ہوتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ عید کی نماز سے پہلے صدقہ فطر ادا کرنے کا حکم دیا گیا، تاکہ خوشی کا یہ پیغام صرف صاحب حیثیت لوگوں تک محدود نہ رہے بلکہ معاشرے کے ہر فرد تک پہنچے۔ لیکن سوال یہ ہے کہ کیا ہم نے عید کے اس حقیقی مفہوم کو سمجھا ہے؟ یا ہم نے اسے صرف ظاہری خوشیوں تک محدود کر دیا ہے؟ یہ وہ سوال ہے جس کا جواب ہمیں اپنے اندر تلاش کرنا ہوگا، خاص طور پر ایسے وقت میں جب ہمارے ارد گرد کے حالات ہمیں مسلسل ایک امتحان میں ڈال رہے ہیں۔

آج کا ہندوستان ایک پیچیدہ دور سے گزر رہا ہے۔ سماجی فضا میں ایک طرح کی بے چینی ہے، اور یہ بے چینی خاص طور پر مسلمانوں کے لیے ایک آزمائش کی

انسان: ایک زندہ سگنل یا محفوظ ہوتی ہوئی حقیقت؟

ہے، اور قیامت کے دن اسے اس کے سامنے پیش کیا جائے گا۔ اگر آج انسان خود ایسی عینا لوجی بنا سکتا ہے جو ڈیٹا کو محفوظ اور دوبارہ پیش کر سکتی ہے، تو یہ تصور بعید نہیں رہتا کہ کائنات کا خالق ایک ایسا مکمل نظام رکھتا ہو جو انسان کی پوری زندگی کو محفوظ کر رہا ہو۔ قرآن یہاں ایک اور جہت انگیز بات کہتا ہے: انسان اپنے اعمال کو دیکھے گا۔ یہ محض پڑھنے یا سننے کا ذکر نہیں بلکہ ایک مکمل و ذریعہ ایکسپریمنس کی طرف اشارہ ہے۔ آج کی ڈیجیٹل دنیا میں، جہاں ویڈیو ریکارڈنگ اور رورچوئل سٹیٹنگ عام ہو چکی ہے، یہ تصور مزید قابل فہم ہوتا ہے کہ اعمال ایک مکمل حقیقت کے طور پر انسان کے سامنے ظاہر کیے جاسکتے ہیں۔ اب اگر ہم انسان کی تخلیق کی طرف دیکھیں تو یہاں بھی قرآن اور سائنس کے درمیان ایک دلچسپ ہم آہنگی نظر آتی ہے۔ جدید ایمر لوجی نے ثابت کیا ہے کہ انسانی جین مختلف مراحل سے گزرتا ہے، نی ابتدائی خلیے سے لے کر پیچیدہ ساخت تک۔ قرآن بھی انسان کی تخلیق کو مختلف مراحل میں بیان کرتا ہے، جو آج کے سائنسی علم کے ساتھ ایک حد تک مطابقت رکھتے ہیں۔ اسی طرح سمندری سائنس نے دریافت کیا کہ گہرے سمندر میں مکمل تاریکی ہوتی ہے اور وہاں مختلف سطحوں پر لہریں موجود ہوتی ہیں جنہیں انٹرنل ویوز کہا جاتا ہے۔ قرآن سمندر کے اندرونی اور بیرونی موجوں پر موج کی مثال دیتا ہے، جو اس پیچیدہ ساخت کی ایک تصویری جھلک پیش کرتی ہے۔ ارضیات کے میدان میں بھی جدید تحقیق نے بتایا ہے کہ پہاڑوں کی جڑیں زمین کے اندر گہرائی تک پھیلی ہوتی ہیں اور وہ زمین کے توازن میں کردار ادا کرتے ہیں۔ قرآن میں پہاڑوں کو "میں" کہا گیا ہے، جو زمین کو تھامے رکھنے والی چیزوں کی طرف اشارہ ہو سکتا ہے۔



جامع نظام ہے جس میں جسم، دماغ اور دل سب شامل ہیں۔ اسی تسلسل میں جدید سائنس کا ایک اور میدان سامنے آتا ہے: نیوروسائنس اور برین سگنل ڈی کوڈنگ۔ آج سائنسدان دماغی لہروں کو پڑھ کر بعض اوقات خیالات یا تصاویر کا اندازہ لگانے میں کامیاب ہو رہے ہیں۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ انسانی سوچ کوئی غیر مرئی راز نہیں بلکہ ایک میزمریل اور ریکارڈیبل فینومنا ہے۔ یہی وہ مقام ہے جہاں قرآن کا تصور حساب و کتاب ایک نئے زاویے سے سمجھا آتا ہے۔ قرآن کہتا ہے کہ انسان کا ہر لفظ اور ہر عمل محفوظ کیا جا رہا

انسانی تاریخ کا سب سے بڑا سوال ہمیشہ یہی رہا ہے کہ کیا یہ کائنات محض اتفاق کا نتیجہ ہے یا اس کے پیچھے کوئی باقاعدہ، با مقصد اور مربوط نظام کارفرما ہے؟ جدید سائنس نے اس سوال کا جواب تلاش کرنے کے لیے صدیوں تک تحقیق کی، مگر جوں جوں علم آگے بڑھا، یہ حقیقت مزید واضح ہوئی گئی کہ کائنات ایک بے ترتیب حادثہ نہیں بلکہ ایک نہایت منظم اور قانون کے تابع نظام ہے۔ جہت انگیز طور پر یہی بنیادی تصور قرآن صدیوں پہلے پیش کر چکا تھا۔ آج کی کاسمولوجی ہمیں بتاتی ہے کہ کائنات کا آغاز ایک انتہائی گھنی اور گرم حالت سے ہوا، جسے بگ بینگ کہا جاتا ہے۔ اس نظریے کے مطابق ابتدا میں تمام مادہ اور توانائی ایک نقطے میں جمع تھی، پھر چانک پھیلاؤ شروع ہوا۔ قرآن ایک مقام پر کہتا ہے کہ آسمان اور زمین باہم جڑے ہوئے تھے اور پھر انہیں جدا کیا گیا۔ اگرچہ یہ آیت سائنسی اصطلاحات میں نہیں، مگر اس کا مفہوم کائنات کی ابتدائی وحدت کی طرف اشارہ کرتا محسوس ہوتا ہے۔ اسی طرح جدید سائنس نے یہ بھی دریافت کیا کہ کائنات مسلسل پھیل رہی ہے۔ کھلنا نہیں ایک دوسرے سے دور جارہی ہیں، جسے ایکسپینڈنگ یونیورس کہا جاتا ہے۔ قرآن میں آسمان کے بارے میں کہا گیا ہے کہ ہم اسے پھیلائے والے ہیں۔ یہ ہم آہنگی اس بات کی طرف اشارہ کرتی ہے کہ قرآن کائنات کو ایک متحرک اور ارتقائی نظام کے طور پر پیش کرتا ہے، نہ کہ ایک جامد ساخت کے طور پر۔ لیکن قرآن کا اصل کمال صرف کائنات کی بیرونی ساخت تک محدود نہیں، بلکہ وہ انسان کے اندرونی جہان یعنی شعور، نیت اور دل پر بھی روش ڈالتا ہے۔ جدید سائنس نے طویل عرصے

मौसम विभाग ने कल अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय और सिक्किम में तेज़ बारिश का अनुमान व्यक्त किया



मौसम विभाग ने कल अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम में तेज़ बारिश का अनुमान व्यक्त किया है। उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम में दिन के दौरान गरज और ओलावृष्टि की संभावना है।

मौसम विभाग ने इस

महीने की 26 तारीख तक आंध्र प्रदेश, मराठवाड़ा, मध्य महाराष्ट्र, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, उत्तरी आंतरिक कर्नाटक और दक्षिणी आंतरिक कर्नाटक में गरज और बिजली चमकने की संभावना व्यक्त की है। कल केरल, माहे, कोंकण और गोवा में गर्म और उमस भरा मौसम रहेगा।

उत्तर प्रदेश दुर्घटना: 4 की मौत, 12 घायल; केंद्र और राज्य ने मुआवज़े का ऐलान किया



उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले के फाफामऊ इलाके में आज दोपहर एक कोल्ड स्टोरेज केन्द्र की छत गिरने से 4 लोगों की मौत हो गई और 12 अन्य घायल हो गए।

मलबे से 17 मजदूरों को बचाया गया है और कई अन्य के फंसे होने की आशंका है। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल और राज्य आपदा मोचन बल की टीमों बचाव और राहत अभियान में लगी हैं। मलबा हटाने के लिए 7 जेसीबी मशीनें मौके पर मौजूद हैं।

राज्य सरकार ने एडीएम विशा की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया है जो अगले 48 घंटे में जांच करेगी और कोल्ड स्टोरेज केन्द्र की छत गिरने के कारणों का पता लगाएगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस घटना पर गहरा दुख व्यक्त किया। उन्होंने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से प्रत्येक मृतक के परिजनों को दो-दो लाख रुपये और घायलों को 50-50 हजार रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्थानीय प्रशासन को तत्काल राहत प्रदान करने और घायलों के लिए उचित चिकित्सा उपचार सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है।

मुख्यमंत्री ने घटना में जान गंवाने वालों के परिजनों के लिए दो-दो लाख रुपये और घायलों को 50-50 हजार रुपये की वित्तीय सहायता देने की घोषणा की।

भारत मंडपम में जुटेगे दुनिया भर के फिल्मकार



दिल्ली में कल से 31 मार्च तक, पहली बार अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का आयोजन भारत मंडपम में शुरू होने जा रहा है। इसमें 47 देशों की एक सौ 40 से अधिक फिल्मों राजधानी के कई स्थानों पर दिखाई जाएंगी। इस फिल्म महोत्सव में निःशुल्क सार्वजनिक प्रदर्शन, चर्चाएं, कार्यशालाएं और सांस्कृतिक

कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस फिल्मोत्सव में प्रवेश, अग्रिम बुकिंग के आधार पर होगा। यह महोत्सव दिल्ली पर्यटन और परिवहन विकास निगम द्वारा दिल्ली सरकार के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। इसमें भारतीय और अंतरराष्ट्रीय सिनेमा की कई प्रमुख हस्तियों के शामिल होने की संभावना है। कार्यक्रम का संचालन निम्नत कौर और

अर्जुन कपूर करेंगे। अनुपम खेर, सान्या मल्होत्रा और सिद्धांत चतुर्वेदी भी उद्घाटन समारोह में शामिल होंगे। फिल्म महोत्सव में ऑस्कर के लिए नामित फिल्म 'सीरत' का प्रदर्शन किया जाएगा। वहीं, फिल्म निर्माता गुरु दत्त की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में एक विशेष आयोजन के अंतर्गत फिल्म 'प्यासा' भी दिखाई जाएगी। वहीं, दिल्ली

यातायात पुलिस ने बताया कि फिल्मोत्सव के कारण विशेष यातायात व्यवस्था लागू रहेगी। उन्होंने बताया कि सुबह 10:00 बजे से रात 10:00 बजे तक मथुरा रोड और भैरों रोड पर आवागमन और पार्किंग प्रतिबंध लागू रहेंगे। इसके साथ ही यातायात पुलिस ने कहा कि भीड़भाड़ से बचने के लिए रिंग रोड और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें।

तमिलनाडु और पुडुचेरी विधानसभा चुनावों के लिए पार्टियों के बीच सीटों का बंटवारा तय

तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव के लिए एनडीए गठबंधन के बीच सीट बंटवारे का समझौता हो गया है। चेन्नई में हुई बैठक की अध्यक्षता भाजपा के वरिष्ठ नेता पीयूष गोयल और ए.आई.ए.डी.एम.के. के महासचिव ई.पलनीसामी ने की। समझौते के अनुसार, एआईएडीएमके 178, भाजपा 27, डॉ. अबुमणि रामदास के नेतृत्व वाले पीएमके गुट 18 और टीटीवी दिनाकरन के नेतृत्व वाली अम्मा मक्कल मुन्नेत्र काच्ची 11



सीटों पर चुनाव लड़ेगी। मीडिया से बातचीत में श्री गोयल ने कहा कि एनडीए गठबंधन महाराष्ट्र, हरियाणा, बिहार और दिल्ली की तरह तमिलनाडु में भी शानदार जीत हासिल

करेगा। कांग्रेस और डीएमके ने भी कल सीट बंटवारे को अंतिम रूप दे दिया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के. सेल्वापेरुंधगई ने कहा कि पार्टी राज्यसभा की एक और विधानसभा की 28 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। इसी बीच पुडुचेरी में भी विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस और डीएमके के बीच सीट बंटवारा हो गया है। कांग्रेस 16 सीटों पर चुनाव लड़ेगी, जबकि डीएमके को बाकी 14 सीटें आवंटित की गई हैं।

निर्वाचन आयोग की 5 मतदान राज्यों व 12 सीमावर्ती राज्यों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक

निर्वाचन आयोग ने आज मतदान वाले पांच राज्यों और उनके सीमावर्ती बारह राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों, मुख्य चुनाव अधिकारियों, पुलिस महानिदेशकों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक की। इसमें चुनाव तैयारियों का आकलन करने, समन्वय बढ़ाने और हिंसा, धमकी तथा प्रलोभन से मुक्त चुनाव सुनिश्चित करने के लिए स्थिति की समीक्षा की गई।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने निर्वाचन आयुक्त डॉ. एस.एस. संधू और डॉ. विवेक जोशी के साथ असम, केरल, पुडुचेरी, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल के साथ-साथ उन छह राज्यों के साथ-साथ उन छह राज्यों में चुनाव तैयारियों और कानून



व्यवस्था की स्थिति की समीक्षा की, जहां उपचुनाव होने हैं। बैठक के दौरान, मतदान वाले राज्यों ने आयोग को अपनी समग्र तैयारियों, कानून व्यवस्था संबंधी मुद्दों और व्यय प्रवर्तन के साथ-साथ केंद्रीय एजेंसियों और पड़ोसी राज्यों के साथ किसी भी चिंता या लंबित मुद्दों के बारे में जानकारी दी।

सीमावर्ती जिलों और मतदान वाले राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों में शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए सीमाएं सील करने पर विशेष ध्यान दिया गया।

इस संबंध में, पड़ोसी सीमावर्ती राज्यों को निर्देश दिया गया कि वे मतदान वाले राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों

को प्रलोभन मुक्त और हिंसा मुक्त चुनाव सुनिश्चित करने में सहायता के लिए हर संभव कदम उठाएं। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड, प्रवर्तन निदेशालय, भारतीय तटरक्षक बल और असम राइफलस सहित अन्य एजेंसियों के प्रमुखों को निर्देश दिया गया कि वे अंतरराष्ट्रीय चौकियों पर कड़ी निगरानी रखें और मतदान करने वाले राज्यों और इन राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों से सटे क्षेत्रों में सतर्कता बढ़ाएं। इसके अतिरिक्त, नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो, आयकर विभाग, केंद्रीय वस्तु तथा सेवा कर और राजस्व खुफिया निदेशालय सहित केंद्रीय एजेंसियों को भी चुनाव से पहले प्रयासों को तेज करने का निर्देश दिया गया है।

لذیذ پکوانوں کے لطف اور عید کی خریداری کے لیے مشہور ہو چکا ہے جعفر آباد کا بازار

نوجوان زیادہ تر چائیز کپڑا خرید کر کرتا سلوارا ہے ہیں۔ اس بازار میں ایک جوتے کی دکان چلانے والے محمد جنید نے بتایا کہ عید کے موقع پر چیلوں کی طلب بہت بڑھ جاتی ہے، اس لیے ہم نے دکان میں 300 روپے سے لے کر 1500 روپے تک کی چیلیں دستیاب کی ہیں۔ اس کے علاوہ جوتوں کی بھی کافی اقسام ہماری دکان پر صارفین کو مل جائیں گی۔ عطر فروش محمد انس کا کہنا ہے کہ عید کے مبارک موقع پر نئے کپڑے ہوں اور عطر نہ لگایا جائے تو عید ادھوری ہی تصور کی جائے گی۔ ہمارے پاس لوگوں کے مزاج کے مطابق نئی طرح کے عطر موجود ہیں۔ اس سال چونکہ موسم نہ گرم ہے، نہ سرد، اس لیے زیادہ تر لوگ عود، گلاب، حص و غیرہ ٹھنڈی تاثیر والے عطر زیادہ پسند کر رہے ہیں۔ جعفر آباد مین روڈ پر لگنے والے اس بازار میں کھانے کی بھی کئی دکانیں اور اسٹالز لگے نظر آتے ہیں۔ اس روڈ پر یامین کی بریانی، اسلام ڈیری کا ٹھنڈا دودھ، شاہی ٹکڑے، ربڑی، حلیم، نواب کے کباب کافی مشہور ہیں، جن سے یہاں خریداری بچھنے والے خوب لطف اندوز ہو رہے ہیں۔



بازار میں کھانے پینے کی بھی دکانیں دیرات تک کھلی رہتی ہیں۔ جعفر آباد مین روڈ پر لگنے والے اس بازار میں میٹرو پینک لائن جعفر آباد میٹرو اسٹیشن اور سلیم پور میٹرو اسٹیشن یلو لائن سے بہ آسانی پہنچا جا سکتا ہے۔ بازار میں کھانے پینے کی بھی دکانیں دیرات تک کھلی رہتی ہیں۔ جعفر آباد مین روڈ پر لگنے والے اس بازار میں میٹرو پینک لائن جعفر آباد میٹرو اسٹیشن اور سلیم پور میٹرو اسٹیشن یلو لائن سے بہ آسانی پہنچا جا سکتا ہے۔

نئی دہلی: رمضان المبارک کا آخری عشرہ چل رہا ہے جس کے چند ایام اب باقی رہ گئے ہیں۔ لوگ اب عید الفطر کی تیاریوں کے لیے بازاروں کا رخ کر رہے ہیں۔ یوں تو ملک کی راجدھانی دہلی میں کپڑوں اور دوسری ضروریات کے سامان کے لیے قروں باغ، لاجپت نگر، ٹینگ روڈ، سینٹرل مارکیٹ، گاندھی نگر مارکیٹ جیسے بہت سے بازار ہیں، لیکن بڑھتی ہوئی مہنگائی میں لوگوں کے بجٹ کے مطابق جعفر آباد مین روڈ پر لگنے والے عید کا خاص بازار مناسب قیمتوں پر عید کی خریداری کے لیے نہ صرف دہلی بلکہ آس پاس کی ریاستوں میں بھی کافی مقبول ہو چکا ہے۔ اس بازار میں مرد و خواتین، بچے و بوڑھے اور جوان ہر عمر کے لوگوں کے لیے مختلف اسٹالز کے کرتا پانجام، جینس، شرٹ، جوتے، چپل، کولہا پوری چپل، مختلف قسم کے عطر وغیرہ ایک عام انسان کے بجٹ کے حساب سے دستیاب ہیں۔ اس بازار میں شام سے لے کر صبح سحری تک رونق نظر آتی ہے اور ایسا لگتا ہے کہ جیسے ایک نیا دن یہاں نکل آیا ہو۔ عید کی خریداری کے ساتھ عید کھانوں سے اگر آپ کو لطف اٹھانا ہے تو جعفر آباد کا یہ بازار ہر کس و ناکس کے لیے کافی پسند آنے والا ہے۔

ایک ہفتے میں سونا 11 ہزار روپے سے زائد سستا، چاندی میں بھی بڑی گراوٹ

مطابق سونے کی قیمت میں تقریباً 6.9 فیصد کمی درج کی گئی، جو گزشتہ 15 برسوں میں سب سے بڑی ہفتہ وار گراوٹ سمجھی جا رہی ہے۔ عالمی سطح پر سونے کی قیمت کم ہو کر 4,574.90 ڈالر فی اونس تک پہنچ گئی، جبکہ ایک ہفتہ قبل یہ 5061.70 ڈالر فی اونس تھی۔ چاندی کی عالمی قیمتوں میں بھی زبردستی کمی دیکھی گئی ہے۔ ایک ہفتے میں چاندی کی قیمت میں 14 فیصد سے زیادہ کمی گراوٹ آئی اور یہ کم ہو کر 69.66 ڈالر فی اونس رہ گئی، جو پہلے 81.34 ڈالر فی اونس تھی۔ ماہرین کا کہنا ہے کہ اس تیز گراوٹ کی بڑی وجہ سرمایہ کاروں کی جانب سے منافع خوری اور امریکی ڈالر کی مضبوطی ہے۔ ڈالر کے مستحکم ہونے سے سرمایہ کاروں کا رجحان قیمتی دھاتوں سے ہٹ کر دیگر سرمایہ کاری کے ذرائع کی طرف بڑھ رہا ہے، جس کے نتیجے میں سونے اور چاندی کی مانگ میں کمی آئی ہے اور قیمتیں نیچے آ گئی ہیں۔



تھی۔ اسی طرح 22 کیریٹ سونے کی قیمت بھی کم ہو کر 1 لاکھ 34 ہزار 852 روپے فی 10 گرام رہ گئی ہے، جبکہ پہلے یہ 1 لاکھ 45 ہزار 093 روپے تھی۔ 18 کیریٹ سونے کی قیمت میں بھی کمی دیکھی گئی اور یہ گھٹ کر 1 لاکھ 10 ہزار 414 روپے فی 10 گرام ہو گئی، جو پہلے 1 لاکھ 18 ہزار 799 روپے فی 10 گرام

نئی دہلی: گزشتہ ایک ہفتے کے دوران سونے اور چاندی کی قیمتوں میں نمایاں کمی درج کی گئی۔ سونا 11 ہزار اور چاندی 28 ہزار روپے سے زائد سستی ہوئی، جس کی بڑی وجہ امریکی مضبوطی اور منافع خوری بنائی جا رہی ہے۔ گزشتہ ایک ہفتے کے دوران سونے اور چاندی کی قیمتوں میں غیر معمولی کمی دیکھنے کو ملی ہے، جس نے سرمایہ کاروں اور خریداروں دونوں کی توجہ اپنی جانب مبذول کر لی ہے۔ اعداد و شمار کے مطابق سونا 11 ہزار روپے سے زیادہ سستا ہو گیا ہے، جبکہ چاندی کی قیمت میں 28 ہزار روپے سے زائد کمی درج کی گئی ہے۔ انڈیا بلین چیمبرز ایسوسی ایشن کے مطابق 24 کیریٹ سونے کی قیمت میں 11 ہزار 181 روپے کمی آئی ہے، جس کے بعد یہ گھٹ کر 1 لاکھ 47 ہزار 218 روپے فی 10 گرام پر پہنچ گیا ہے۔ اس سے قبل سونے کی یہی قیمت 1 لاکھ 58 ہزار 399 روپے فی 10 گرام

'آپ' کو بڑا جھٹکا، دمن پریت سنگھ کانگریس میں شامل

چنڈی گڑھ: بلدیاتی انتخابات سے قبل شہر کی سیاست میں تیزی سے تبدیلیاں دیکھنے کو مل رہی ہیں۔ عام آدمی پارٹی (آپ) کو ایک اور بڑا جھٹکا اس وقت لگا جب وارڈ نمبر 17 کے کونسلر دمن پریت سنگھ نے کانگریس میں شمولیت اختیار کر لی۔ دمن پریت سنگھ نے سیکٹر 35 واقع راجیو گاندھی کانگریس بھون میں منعقدہ ایک تقریب کے دوران اپنے سینکڑوں حامیوں کے ساتھ کانگریس کا دامن تھاما۔ اس موقع پر اسے اے پی کے سابق لیڈر اور ڈسٹرکٹ بار ایسوسی ایشن سیکرٹری 43 کے خزانچی اجول بھسین، ایڈووکیٹ وشال شرما اور پوراج اشٹ بھی کانگریس میں شامل ہوئے۔ دمن پریت سنگھ نے اپنی شمولیت کو گھر واپسی قرار دیتے ہوئے کہا کہ کانگریس ایک ایسا پلیٹ فارم ہے جہاں سے وہ اپنے وارڈ اور شہر کی بہتر خدمت کر سکتے ہیں۔ واضح رہے کہ گزشتہ ڈھائی ماہ کے دوران یہ دوسرا موقع ہے جب 'آپ' کے کسی کونسلر نے پارٹی چھوڑ کر کانگریس کا رخ کیا ہے۔ اس سے قبل میزبان پارٹی کے بعد کونسلر پریم لٹا بھی پارٹی سے استعفیٰ دے چکے تھے۔ موجودہ صورتحال کے مطابق میونسپل کارپوریشن میں بی جے پی کے پاس 18 کونسلر ہیں جبکہ کانگریس کے 8 کونسلر اور ایک رکن پارلیمنٹ کا ووٹ ہے۔ دوسری جانب 'آپ' کے کونسلروں کی تعداد کم ہو کر 9 رہ گئی ہے، جس سے پارٹی کی پوزیشن کمزور ہوتی نظر آ رہی ہے۔ سیاسی مبصرین کا کہنا ہے کہ انتخابات کے قریب آتے ہی پارٹی تبدیلی کا سلسلہ مزید تیز ہو سکتا ہے۔ دسمبر 2026 میں متوقع بلدیاتی انتخابات سے قبل وارڈ بندی کا عمل بھی شروع ہو چکا ہے، تاہم ابھی تک باضابطہ تاریخ کا اعلان نہیں کیا گیا۔



ایل پی جی بحران کے دوران نئی شرط، کوٹے سے زائد سلنڈر کے لیے سوالات کے جوابات لازمی

ہیں۔ ماہرین کا کہنا ہے کہ حکومت اور متعلقہ کپنیوں کو ایسی پالیسی بنانے وقت زمین حقائق کو مدنظر رکھنا چاہیے، کیونکہ ملک کی ایک بڑی آبادی ابھی بھی ڈیجیٹل سہولیات سے پوری طرح مستفید نہیں ہو سکی ہے۔ خاص طور پر دیہی علاقوں میں انٹرنیٹ کی محدود دستیابی اور ڈیجیٹل خواندگی کی کمی ایسے اقدامات کو عملی طور پر مشکل بنا دیتی ہے۔ صارفین نے بھی اس نئے نظام پر سوالات اٹھاتے ہوئے کہا ہے کہ اگر کسی ہنگامی صورتحال میں فوری طور پر اضافی سلنڈر درکار ہو تو آپ کے ذریعے معلومات فراہم کرنے کا عمل وقت طلب ثابت ہو سکتا ہے۔ اس کے علاوہ بزرگ شہریوں کے لیے بھی یہ طریقہ کار پیچیدہ محسوس ہو رہا ہے، جو پہلے ہی جدید ٹیکنالوجی کے استعمال میں مشکلات کا سامنا کرتے ہیں۔ کچھ صارفین کا کہنا ہے کہ اس فیصلے سے بلیک مارکیٹ پر قابو پانے میں مدد مل سکتی ہے، تاہم اس کے ساتھ ساتھ عام صارفین کو درپیش مشکلات کو بھی نظر انداز نہیں کیا جانا چاہیے۔ ان کا مطالبہ ہے کہ حکومت متبادل طریقہ کار بھی فراہم کرے، جیسے کہ کال سینٹر یا ایس ایم ایس کے ذریعے تصدیق کا نظام، تاکہ ہر طبقہ آسانی سے اس سہولت سے فائدہ اٹھا سکے۔ ادھر گیس ایجنسی مالکان کا کہنا ہے کہ اگرچہ نفاذ کے لیے اس اصول کے باعث انہیں بھی مشکلات پیش آ رہی ہیں۔



کے جوابات دینا مشکل ہوگا، جس کے باعث انہیں گیس ایجنسیوں کے بار بار چکر لگانے پڑ سکتے ہیں۔ دوسری جانب اس فیصلے پر تشویش کا اظہار بھی کیا جا رہا ہے، کیونکہ ملک میں اب بھی بڑی تعداد میں ایسے شہری اور دیہی صارفین موجود ہیں جو اسمارٹ فون استعمال نہیں کرتے۔ ان کے لیے ایپ ڈاؤن لوڈ کرنا اور سوالات کے جوابات دینا مشکل ہوگا، جس کے باعث انہیں گیس ایجنسیوں کے بار بار چکر لگانے پڑ سکتے

ہیں۔ جی ڈسٹری بیوٹرز ایسوسی ایشن کے ریاستی سکریٹری آدرش گپتا کے مطابق نئے رہنما اصولوں کے تحت اضافی سلنڈر حاصل کرنے کے لیے موبائل ایپ کے ذریعے مکمل تفصیلات فراہم کرنا لازمی قرار دیا گیا ہے۔ دوسری جانب اس فیصلے پر تشویش کا اظہار بھی کیا جا رہا ہے، کیونکہ ملک میں اب بھی بڑی تعداد میں ایسے شہری اور دیہی صارفین موجود ہیں جو اسمارٹ فون استعمال نہیں کرتے۔ ان کے لیے ایپ ڈاؤن لوڈ کرنا اور سوالات

نئی دہلی: ملک میں ایل پی جی سلنڈروں کی قلت کے درمیان صارفین کے لیے ایک نئی شرط متعارف کرا دی گئی ہے، جس کے تحت اب سالانہ مقررہ کوٹے سے زائد سلنڈر حاصل کرنے کے لیے اضافی معلومات فراہم کرنا لازمی ہوگا۔ بھارت پیٹرولیم کارپوریشن لمیٹڈ (بی پی سی ایل) نے اس سلسلے میں نیا طریقہ کار نافذ کیا ہے، جس پر اتوار سے عمل درآمد شروع ہو گیا ہے۔ نئے ضابطے کے مطابق وہ صارفین جو ایک مالی سال کے دوران اپنے 12 سلنڈروں کا کوٹہ مکمل کر چکے ہیں، انہیں مزید بلنگ کے لیے ہیلو پی پی سی ایل ایپ کا استعمال کرنا ہوگا۔ اس ایپ کے ذریعے صارفین کو مختلف سوالات کے جوابات دینا ہوں گے، جن میں خاندان کے افراد کی تعداد، مہمانوں کی آمد، گھر میں شادی، بھینڈارا یا دیگر تقریبات کی تفصیلات شامل ہیں۔ ان معلومات کی فراہمی کے بعد ہی اضافی سلنڈر کی بلنگ ممکن ہو سکی۔ ابتدائی طور پر اس نئے اصول کے نفاذ سے صارفین اور گیس ایجنسی آپریٹرز میں الجھن کی صورتحال پیدا ہو گئی۔ متعدد صارفین نے جب موبائل کے ذریعے بلنگ کی کوشش کی تو ناکامی کے بعد وہ گیس ایجنسیوں کا رخ کرنے پر مجبور ہوئے۔ ایجنسی کے عمل کو بھی ابتدا میں اس نئے نظام کی معلومات نہیں تھیں، تاہم بعد میں کئی حکام سے رابطے پر اس پالیسی کی تصدیق ہوئی۔ آل انڈیا ایل پی

टीबी के इलाज में आयुर्वेद को बढ़ावा, संयुक्त अध्ययन की घोषणा

नई दिल्ली, विश्व क्षय रोग (टीबी) दिवस के अवसर पर, केंद्रीय आयुष मंत्रालय ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के साथ साझेदारी में 'आयुर्वेद में तपेदिक के लिए सहायक चिकित्सा के रूप में नैदानिक अध्ययन' शीर्षक से एक सहयोगी नैदानिक अध्ययन की औपचारिक घोषणा के साथ एकीकृत स्वास्थ्य सेवा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन राज्य मंत्री, परमाणु ऊर्जा विभाग और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह और आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री प्रतापराव जाधव ने मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारियों और वैज्ञानिकों की उपस्थिति में इस बारे में संयुक्त रूप से घोषणा की। नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित इस उच्च स्तरीय कार्यक्रम में प्रमुख नीति निर्माता, वैज्ञानिक, विद्वान, शोधकर्ता, चिकित्सक और अन्य महत्वपूर्ण हितधारक भी एकत्रित हुए, ताकि तपेदिक के खिलाफ लड़ाई में पारंपरिक और आधुनिक चिकित्सा के साक्ष्य-आधारित एकीकरण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया जा सके।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय, परमाणु ऊर्जा विभाग और अंतरिक्ष विभाग के राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने अपने संबोधन में कहा, 'भारत तपेदिक के खिलाफ लड़ाई में सही दिशा में आगे बढ़ रहा है और माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में समर्पित तथा नवोन्मेषी प्रयासों के कारण तपेदिक के मामलों में उल्लेखनीय कमी आई है।' उन्होंने कहा, 'इस सहयोगात्मक नैदानिक अध्ययन का शुभारंभ विज्ञान-आधारित, साक्ष्य-आधारित नवाचार के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जो आधुनिक जैव चिकित्सा अनुसंधान को मान्य पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के साथ एकीकृत करता है। जैव



प्रौद्योगिकी विभाग के नेतृत्व में की गई पहलों के माध्यम से, हम अनुसंधान को मजबूत कर रहे हैं, वैश्विक साझेदारियों को बढ़ावा दे रहे हैं और दवा प्रतिरोध, कुपोषण तथा तपेदिक के दीर्घकालिक स्वास्थ्य प्रभावों जैसी चुनौतियों का समाधान करने के लिए रोगी-केंद्रित समाधानों को आगे बढ़ा रहे हैं।'

आयुष मंत्रालय के माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री प्रतापराव जाधव ने अपने संबोधन में जोर देते हुए कहा: 'तपेदिक का उपचार केवल संक्रमण को समाप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि रोगी को पूर्णतः स्वस्थ बनाने के बारे में भी है। इस दृष्टिकोण के साथ, हम एक नए परिप्रेक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ आयुर्वेद और अन्य आयुष प्रणालियाँ न केवल उपचार में सहायक हैं, बल्कि रोगियों के स्वास्थ्य लाभ, पोषण और जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।'

कार्यक्रम का शुभारंभ डीबीटी के सचिव, बीआरआईसी के महानिदेशक और बीआईआरएसी के अध्यक्ष डॉ. राजेश एस. गोखले के उद्घाटन भाषण से हुआ। उन्होंने कहा, 'भारत में तपेदिक अनुसंधान ने निदान, टीकों और बड़े पैमाने पर किए गए विभिन्न अध्ययनों में नवाचार के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति हुई है। आयुष मंत्रालय के साथ यह सहयोगात्मक कार्यक्रम एकीकृत, साक्ष्य-आधारित स्वास्थ्य सेवा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। आधुनिक विज्ञान को आयुर्वेद के साथ मिलाकर, हमारा उद्देश्य रोगियों के उपचार परिणामों में

सुधार करना, जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाना और भारत के तपेदिक उन्मूलन मिशन को गति देना है।'

आयुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कोटेचा ने इसके बाद अपने विचार व्यक्त किए। कोटेचा ने कहा, 'तपेदिक प्रबंधन के लिए न केवल प्रभावी उपचार बल्कि स्वास्थ्य लाभ और जीवन की गुणवत्ता पर भी ध्यान देना आवश्यक है। आयुष-डीबीटी की यह संयुक्त पहल साक्ष्य-आधारित एकीकृत स्वास्थ्य सेवा के लिए हमारी प्रतिबद्धता दर्शाती है। आयुर्वेद को विज्ञान के साथ जोड़कर, हमारा उद्देश्य तपेदिक से संबंधित दुर्बलता को दूर करना, रोगियों के स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाना और भारत के तपेदिक उन्मूलन के लक्ष्य में सार्थक योगदान देना है।'

आयुर्वेद विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) के महानिदेशक प्रोफेसर वैद्य रवीनारायण आचार्य और बीआरआईसी-राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान (एनआईआई) के निदेशक डॉ. देबासिसा मोहंती ने सहयोगात्मक नैदानिक अध्ययन का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। प्रस्तुति में अध्ययन की वैज्ञानिक रूपरेखा, उद्देश्य और अपेक्षित परिणामों का विस्तार से वर्णन किया गया, जिसका उद्देश्य मानक तपेदिक रोधी उपचार (एटीटी) के साथ-साथ वृक्क पोषक तत्वों के पूरक के रूप में आयुर्वेद पद्धति की प्रभावकारिता, सुरक्षा और सहनशीलता का मूल्यांकन करना है।

यह सहयोगात्मक नैदानिक अध्ययन आयुष मंत्रालय और जैव प्रौद्योगिकी विभाग की एक संयुक्त पहल है, जो मई 2026 में एकीकृत

और साक्ष्य-आधारित स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देने के लिए हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन पर आधारित है। आयुर्वेद विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) के नेतृत्व में और डीबीटी के सहयोग से संचालित यह बहु-केंद्रीय अध्ययन, पोषण संबंधी सहायता के साथ-साथ मानक तपेदिक-रोधी उपचार (एटीटी) के पूरक के रूप में आयुर्वेद उपचार की प्रभावकारिता, सुरक्षा और सहनशीलता का मूल्यांकन करेगा। एम्स, जेआईपीएमईआर और एनईआईजीआरआईएचएमएस सहित प्रमुख संस्थानों में आयोजित होने वाले इस रूढ़ि महीने के अध्ययन का उद्देश्य तपेदिक रोगियों में पोषण संबंधी परिणामों में सुधार, शीघ्र स्वस्थ होने और जीवन की गुणवत्ता में सुधार के संबंध में ठोस वैज्ञानिक प्रमाण जुटाना है, जिससे तपेदिक उन्मूलन के लिए नवीन, रोगी-केंद्रित दृष्टिकोणों के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को और मजबूती मिलेगी।

इस कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण ब्रिक्-ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट (टीएचएसटीआई) और सीसीआरएएस के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) का आदान-प्रदान था, जिसने संस्थागत सहयोग को औपचारिक रूप दिया। समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान ब्रिक्-टीएचएसटीआई के कार्यकारी निदेशक प्रो. जी. कार्तिकेयन और सीसीआरएएस के महानिदेशक प्रो. वैद्य रवीनारायण आचार्य के बीच हुआ।

कार्यक्रम का समापन भारत सरकार की जटिल सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान के लिए एकीकृत, साक्ष्य-आधारित स्वास्थ्य देखभाल समाधानों को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता की दृढ़तापूर्वक पुष्टि के साथ हुआ। आयुष-डीबीटी सहयोगात्मक पहल से टीबी की सहायक देखभाल में नई वैज्ञानिक सुझाव और विचार प्राप्त होने की संभावना है, साथ ही बेहतर रोगी परिणामों और टीबी उन्मूलन की दिशा में त्वरित प्रगति के लिए पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक जैव चिकित्सा अनुसंधान के साथ जोड़ने में भारत के नेतृत्व को सुदृढ़ किया जाएगा।

धन-धान्य योजना से बढ़ेगी किसानों की आय, 100 जिलों पर रहेगा फोकस

नई दिल्ली, प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना (डीडीकेवाई) के अंतर्गत आने वाले 100 जिलों की पहचान कम फसल उत्पादकता, कम फसल सघनता और कम कृषि ऋण वितरण जैसे तीन प्रमुख संकेतकों के आधार पर की गई है।

डीडीकेवाई योजना का उद्देश्य कृषि उत्पादकता बढ़ाना, फसल विविधीकरण और सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने को बढ़ावा देना, पंचायत और ब्लॉक स्तर पर फसल कटाई के बाद के भंडारण की व्यवस्था को मजबूत करना, सिंचाई सुविधाओं में सुधार करना और दीर्घकालिक व अल्पकालिक ऋण की उपलब्धता को सुगम बनाना है।

डीडीकेवाई जिलों की जिला कार्य योजना (डीएपी) को 'जिला धन-धान्य कृषि योजना समिति' द्वारा तैयार और कार्यान्वित किया जाता है। ये योजनाएं कृषि विभागों की 15 केंद्रीय योजनाओं, राज्य योजनाओं और निजी क्षेत्र की



भागीदारी के समन्वय से बनाई जाती हैं। डीएपी का उद्देश्य स्थानीय बाधाओं की पहचान करना और एमआईडीएच और आरकेवीवाई सहित प्रासंगिक योजनाओं के समन्वय के माध्यम से उनको दूर करना है। जलवायु-अनुकूल कृषि प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करना और संरक्षित खेती, सूक्ष्म सिंचाई व फसल कटाई के बाद के बुनियादी ढांचे जैसी जलवायु-स्मार्ट परिसंपत्तियों के सृजन करने जैसे विशिष्ट हस्तक्षेपों को भी इन कार्य योजनाओं में शामिल किया जा सकता है।

नई दिल्ली में पूर्वी क्षेत्र समीक्षा बैठक संपन्न, संचार लेखा पर मंथन

नई दिल्ली, दूरसंचार विभाग के महानियंत्रक संचार लेखा (सीजीसीए) कार्यालय ने महानियंत्रक संचार लेखा सुश्री वंदना गुप्ता की अध्यक्षता में 23-24 मार्च 2026 को नई दिल्ली के घिंटोरनी में राष्ट्रीय संचार अकादमी-वित्त (एनसीए-एफ) में पूर्वी क्षेत्र समीक्षा बैठक का आयोजन किया।

पूर्वी क्षेत्र की फील्ड इकाइयों के प्रदर्शन और प्रगति की समीक्षा करने और प्रमुख कार्यात्मक क्षेत्रों में समन्वय को मजबूत करने के लिए बैठक का आयोजन किया गया था। पूर्वी क्षेत्र में कोलकाता, बिहार, असम, झारखंड, उत्तर



पूर्व-1, पश्चिम बंगाल और उत्तर पूर्व-11 की फील्ड इकाइयां शामिल हैं। इस समीक्षा बैठक में प्रधान सीसीए/सीसीए सहित वरिष्ठ अधिकारियों और इन सर्किलों के अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।

दो दिवसीय बैठक के दौरान प्रशासन, पेंशन, आंतरिक लेखा परीक्षा, राजस्व प्रबंधन और

डिजिटल भारत निधि (डीबीएन) से संबंधित गतिविधियों सहित महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विस्तृत चर्चा हुई। फील्ड इकाइयों ने राजस्व निर्धारण, भ्रष्टाचार की रोकथाम, पेंशन सेवा वितरण और आंतरिक लेखा परीक्षा तंत्र को मजबूत करने के क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों, चुनौतियों और चल रहे कार्यों को प्रस्तुत किया।

ہماچل پردیش میں لینڈ سلائیڈنگ کا خطرہ، گوشالہ تباہ، 9 خاندان محفوظ مقام پر منتقل

شاہراہ کی تعمیر کے دوران پہاڑی کٹنگ کو لینڈ سلائیڈنگ کی بڑی وجہ قرار دیا جا رہا ہے۔ مقامی افراد کا کہنا ہے کہ تعمیراتی سرگرمیوں کے باعث پہاڑی کمزور ہو گئی ہے۔ ایس ڈی ایم کوٹلی نے تحصیلدار کے ہمراہ موقع پر پہنچ کر صورتحال کا جائزہ لیا۔ انہوں نے بتایا کہ پہاڑی سے مسلسل ملبہ اور چٹانیں گرنے کا خدشہ ہے اور مزید نقصانات سے بچنے کے لیے حفاظتی اقدامات جاری ہیں۔ واضح رہے کہ پرم دیوسیت کئی دیگر افراد کے مکانات بھی خطرے کی زد میں ہیں، جبکہ لینڈ سلائیڈنگ کے باعث قریبی دیہات کو بھی خطرہ لاحق ہو گیا ہے۔



رکھا راشن اور دیگر سامان بھی تباہ ہو گیا۔ انتظامیہ نے بروقت کارروائی کرتے ہوئے خطرے کے پیش نظر گاؤں کے 9 خاندانوں کو فوری طور پر محفوظ مقام پر منتقل کر دیا ہے۔ کچھ خاندانوں کو پانچاٹ بھون میں رہائش دی گئی ہے جبکہ دیگر اپنے رشتہ داروں کے یہاں منتقل ہو گئے ہیں۔ متاثرہ ہر خاندان کو فوری امداد کے طور پر 10 ہزار روپے فراہم کیے گئے ہیں۔ ذرائع کے مطابق علاقے میں قومی

منڈی: ہماچل پردیش کے ضلع منڈی کے کوٹلی سب ڈویژن کے تحت گرام پنچایت سوراڈی کے روپڑوگاؤں میں لینڈ سلائیڈنگ کا شدید خطرہ پیدا ہو گیا ہے۔ پہاڑی علاقے میں دراڑیں پڑنے کے باعث بڑی بڑی چٹانیں اور ملبہ گاؤں کے اوپر خطرناک انداز میں لٹک رہے ہیں، جس سے مقامی باشندوں میں شدید خوف و ہراس پایا جاتا ہے۔ اطلاعات کے مطابق حالیہ دو روزہ بارش کے بعد پہاڑی میں شکاف پڑ گئے، جس کے نتیجے میں ایک بڑی چٹان کھسک کر مقامی رہائشی پرم دیو کی گوشالہ پر آگری اور اسے مکمل طور پر زمین بوس کر دیا۔ واقعہ میں گوشالہ میں

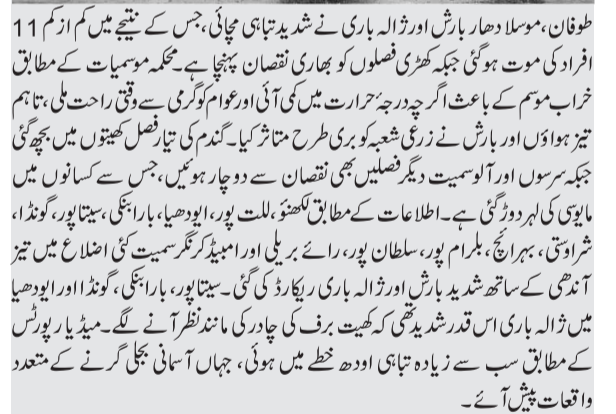
جھارکھنڈ: ندی کے کنارے 500 پاؤنڈ وزنی امریکی زندہ بم برآمد، علاقے میں خوف و ہراس

جھارکھنڈ: جھارکھنڈ کے جھارکھنڈ پور کے بھراگواڑا تھانہ علاقے میں سوارزکھانہ ندی کے کنارے ایک انتہائی خطرناک زندہ بم کی برآمدگی سے سستی پھیل گئی۔ یہ واقعہ 21 مارچ کو اس وقت پیش آیا جب مقامی افراد ندی کے کنارے ریت کی کھدائی کر رہے تھے اور زمین کے اندر دبے ایک بڑے بم کا انکشاف ہوا۔ اطلاعات کے مطابق برآمد شدہ بم گیس سلنڈر کے سائز کا ہے اور اس کا وزن تقریباً

500 پاؤنڈ (227 کلوگرام) بتایا جا رہا ہے۔ بم پر 'ایس این ایم 64 ماڈل درج ہے اور اس پر 'میڈ ان امریکہ' بھی لکھا ہوا ہے۔ ماہرین کے مطابق یہ ایک ان ایکسپلوڈیو آرڈیننس (UXO) ہے، جس کا تعلق ممکنہ طور پر دوسری جنگ عظیم سے ہو سکتا ہے اور یہ اب بھی فعال حالت میں ہے۔ بم سٹن کی اطلاع کے بعد علاقے میں افراتفری مچ گئی اور عوام میں شدید خوف و ہراس پھیل گیا۔ ضلع انتظامیہ نے فوری کارروائی کرتے ہوئے مقام کو گھیرے میں لے لیا اور سکیورٹی کے سخت انتظامات کیے گئے ہیں۔ قریبی دیہاتوں میں الٹ جاری کرتے ہوئے لوگوں کو محفوظ فاصلے پر رہنے کی ہدایت دی گئی ہے۔ علاقائی پولیس سپرنٹنڈنٹ رشیہ گروگ کے مطابق بم بظاہر کافی پرانا ہے، تاہم ابھی نہایت خطرناک ہے۔ راپچی سے بم ڈسپوزل اسٹواڈ اور فوج کی ٹیم کو موقع پر طلب کر لیا گیا ہے تاکہ اسے محفوظ طریقے سے ناکارہ بنایا جا سکے۔ حکام کا کہنا ہے کہ بم کو فوج کی نگرانی میں جلد ہی ناکارہ بنایا جائے گا، جبکہ علاقے میں مکمل چوکسی برقرار رکھی گئی ہے۔

اتر پردیش میں آندھی، بارش اور زلزلہ باری کی تباہ کاری، 11 افراد ہلاک، فصلیں برباد

لکھنؤ: اتر پردیش کے 25 سے زائد اضلاع میں گزشتہ 24 گھنٹوں کے دوران آندھی، طوفان، موسلا دھار بارش اور زلزلہ باری نے شدید تباہی مچائی، جس کے نتیجے میں کم از کم 11 افراد کی موت ہو گئی جبکہ کھڑی فصلوں کو بھاری نقصان پہنچا ہے۔ محکمہ موسمیات کے مطابق خراب موسم کے باعث اگرچہ درجہ حرارت میں کمی آئی اور عوام کو گرمی سے وقتی راحت ملی، تاہم تیز ہواؤں اور بارش نے زرعی شعبہ کو بری طرح متاثر کیا۔ گندم کی تیار فصل کھیتوں میں چھٹی گئی جبکہ سرسوں اور آلو سمیت دیگر فصلیں بھی نقصان سے دوچار ہوئیں، جس سے کسانوں میں مایوسی کی لہر دوڑ گئی ہے۔ اطلاعات کے مطابق لکھنؤ، لٹ پور، ایلوہیا، بارانجی، سینٹاپور، گونڈا، شراوتی، بہرائچ، بلرام پور، سلطان پور، رائے بریلی اور امبیدکر نگر سمیت کئی اضلاع میں تیز آندھی کے ساتھ شدید بارش اور زلزلہ باری ریکارڈ کی گئی۔ سینٹاپور، بارانجی، گونڈا اور ایلوہیا میں زلزلہ باری اس قدر شدید تھی کہ کھیت برف کی چادر کی مانند نظر آنے لگے۔ میڈیا رپورٹس کے مطابق سب سے زیادہ تباہی اودھ خطے میں ہوئی، جہاں آسانی بجلی گرنے کے متعدد واقعات پیش آئے۔



ستے ڈالر کے جھانسنے میں آکر تاجر سے 50.6 لاکھ روپے کی ٹھگی

کا کہہ کر موقع سے فراہم ہو گیا۔ اس دوران اس کا ساتھی فیصل موقع پر موجود رہا، لیکن کچھ دیر بعد اس نے بھی جھگڑے کا ناکہ کر کے فرار ہونے میں کامیابی حاصل کی۔ واقعہ کا علم ہوتے ہی متاثرہ تاجر نے لال گیٹ پولیس اسٹیشن میں شکایت درج کرائی۔ پولیس نے دونوں ملزمان کے خلاف دھوکہ دہی کا مقدمہ درج کر کے تفتیش شروع کر دی ہے۔ سی سی ٹی وی فوٹیج کی مدد سے ملزمان کی تلاش جاری ہے۔ پولیس نے عوام سے اپیل کی ہے کہ وہ غیر مجاز افراد کے ساتھ غیر ملکی کرنسی کے لین دین سے گریز کریں اور کسی بھی مشکوک پیشکش پر فوری طور پر اطلاع دیں۔



سورت: گجرات کے شہر سورت کے وراچھا علاقے میں ایک پراپرٹی ڈیلر ستے ڈالر کے لاکھ میں آکر 50.6 لاکھ روپے کی ٹھگی کا شکار ہو گیا۔ ٹھگوں نے فلی انداز میں منصوبہ بندی کے تحت واردات کو انجام دیتے ہوئے نقد رقم سے بھرا بیگ لے کر فرار ہو گئے۔ پولیس کے مطابق یوٹی پیوچ کی ترویجی سوسائٹی کے رہائشی تملیش پراک جی بھائی جوگانی، جو زمین کے کاروبار سے وابستہ ہیں، اپنے ایک دوست کی ڈالر کی ضرورت پوری کرنے کے لیے رابطے میں آئے۔ اس دوران ان کا رابطہ

فرماہم کرنے کا وعدہ کیا۔ ملزمان نے تاجر کو پہلے بھوانی مندر کے قریب بلایا اور پھر سیکیورٹی کا بھانہ بنا کر لال گیٹ علاقے کی ایک سنسان گلی میں لے گئے۔ وہاں ملزمان نے پیسے گنتے کے بہانے 50.6 لاکھ روپے سے بھرا بیگ اپنے قبضے میں لے لیا اور ڈالر لانے

روپے کی گراوٹ مہنگائی کا اشارہ، حکومت پر راہل گاندھی کی تنقید

جی کی قیمتوں میں اضافہ کیا جا سکتا ہے، جس سے مہنگائی مزید بڑھے گی۔ انہوں نے الزام عائد کیا کہ بی جے پی قیادت والی حکومت کے پاس اس بحران سے نمٹنے کے لیے کوئی واضح حکمت عملی موجود نہیں ہے۔ انہوں نے اپنے بیان کے اختتام پر کہا کہ اصل سوال یہ ہے کہ حکومت کے دعووں کے باوجود عام آدمی کی تنہائی میں کیا باقی رہ جاتا ہے۔ ان کے اس بیان کے بعد مہنگائی، روپے کی قدر میں گراوٹ اور ایندھن کی قیمتوں کو لے کر سیاسی بحث ایک بار پھر تیز ہو گئی ہے۔



ہوگا۔ کانگریس لیڈر نے خدشہ ظاہر کیا کہ موجودہ معاشی حالات کے سبب غیر ملکی سرمایہ کار (ایف آئی آئی) اپنا سرمایہ نکال سکتے ہیں، جس سے شیئر بازار پر دباؤ بڑھے گا اور معیشت میں عدم استحکام پیدا ہو سکتا ہے۔ ان کے مطابق اس کا براہ راست اثر ہر گھر کے بجٹ پر پڑے گا۔ راہل گاندھی نے یہ بھی کہا کہ انتخابات کے بعد پیڑل اور ایل پی

نئی دہلی: ہندوستانی روپے کی قدر میں مسلسل گراوٹ اور ایندھن کی بڑھتی قیمتوں کے درمیان لوک سبھا میں قائد حزب اختلاف راہل گاندھی نے مرکز کی مودی حکومت کو کڑی تنقید کا نشانہ بنایا ہے۔ ان کا کہنا ہے کہ روپے کا ڈالر کے مقابلے میں 100 کی سطح کے قریب پہنچنا آنے والی مہنگائی کا واضح اشارہ ہے۔ راہل گاندھی نے سوشل میڈیا پلیٹ فارم ایکس پر اپنے بیان میں کہا کہ یہ صرف اعداد و شمار نہیں بلکہ عام آدمی کی زندگی پر پڑنے والے اثرات کی نشاندہی کرتے ہیں۔ انہوں نے خبردار

آٹھ سال بعد دہلی کی پیٹیا لہ ہاؤس کورٹ سے ملا انصاف، پو-اے-پی-اے کیس میں اے-پی-سی آر کی کوششوں سے دہلی کے باعزت بری

معاملہ اس بات کو واضح طور پر ظاہر کرتا ہے کہ انسداد دہشت گردی قوانین کے تحت تفتیشی عمل میں شفافیت، احتیاط اور جوابدہی کو یقینی بنانا کس قدر ضروری ہے۔ ماہرین کے مطابق، اس طرح کے مقدمات میں طویل حراست اور کمزور شواہد انصاف کے نظام پر عوامی اعتماد کو متاثر کر سکتے ہیں، جس کے لیے مؤثر اصلاحات اور مضبوط حفاظتی اقدامات ناگزیر ہیں۔ مزید برآں، یہ فیصلہ عدالتوں کی اس بنیادی ذمہ داری کو بھی اجاگر کرتا ہے کہ وہ حساس نوعیت کے مقدمات میں بھی غیر جانبداری اور شواہد کی بنیاد پر فیصلے کریں، چاہے ان پر کتنا ہی سیاسی یا سماجی دباؤ کیوں نہ ہو۔ اس تناظر میں یہ فیصلہ مستقبل کے لیے ایک اہم عدالتی نظیر کے طور پر دیکھا جا رہا ہے۔ اے پی سی آر کے مطابق، یہ کیس اس کے اس عزم کی عکاسی کرتا ہے کہ وہ ان افراد کے ساتھ کھڑی رہے گی جو طویل عرصے تک اپنی بے گناہی ثابت کرنے کے لیے جدوجہد کرتے ہیں، اور جن کی آواز اکثر دب جاتی ہے۔ تنظیم نے اس عزم کا اعادہ کیا کہ وہ آئندہ بھی انصاف، آئینی حقوق اور قانونی شفافیت کے لیے اپنی کوششیں جاری رکھے گی۔



ان کی زندگی کے آٹھ قیمتی سال ضائع ہو چکے ہیں۔ یہ کیس اس بات کی واضح مثال ہے کہ کس طرح بے بنیاد الزامات کسی کی زندگی کو مکمل طور پر تباہ کر سکتے ہیں۔ اے پی سی آر کے جرنل سیکریٹری ملک معتمد نے بھی اس موقع پر اپنے ردعمل کا اظہار کرتے ہوئے کہا کہ یہ مقدمہ ایک خطرناک رجحان کی نشاندہی کرتا ہے، جہاں غیر معمولی قوانین جیسے پو-اے-پی-اے کو ایسے انداز میں استعمال کیا جا رہا ہے کہ بنیادی

فریم کے گئے۔ مزید برآں، 2024 تک دہلی ہائی کورٹ کی جانب سے ضمانت کی درخواستیں مسترد کیے جانے کے باعث ملزمان مسلسل حراست میں رہے، جس سے ان کی قید کا دورانیہ مزید طویل ہو گیا۔ تاہم، طویل سماعتوں اور شواہد کے باریک بینی سے جائزے کے بعد عدالت اس نتیجے پر پہنچی کہ استغاثہ اپنے دعووں کے حق میں کوئی ٹھوس، قابل اعتبار اور ناقابل تردید ثبوت پیش کرنے میں مکمل طور پر ناکام رہا، جس کے نتیجے میں دونوں ملزمان کو باعزت بری کر دیا گیا۔ اے پی سی آر کی قانونی ٹیم نے اس مقدمے کو مسلسل تنقید کی، مہارت اور عزم کے ساتھ آگے بڑھا۔ تنظیم کے قومی سیکریٹری ندیم خان نے فیصلے پر ردعمل دیتے ہوئے کہا کہ اگرچہ یہ ایک بڑی قانونی کامیابی ہے، لیکن اس کی انسانی قیمت کو نظر انداز نہیں کیا جا سکتا۔ ان کے مطابق، آج ان افراد سے دہشت گردی کا لیبل ہٹ گیا ہے، مگر

نئی دہلی (ٹاپ نیوز): ایسوسی ایشن فار پروٹیکشن آف سول رائٹس (APCR) کی کوششوں سے اس وقت ایک اہم اور تاریخی قانونی کامیابی ملی جب نئی دہلی کے اسٹیبل منسٹر میں درج ایف آئی آر نمبر 106/2018 میں پیٹیا لہ ہاؤس کورٹ نے جھڈ پور پال اور پرویز رشید کو تمام الزامات سے باعزت بری کر دیا ہے۔ یہ فیصلہ نہ صرف ایک طویل اور صبر آزما قانونی جدوجہد کا نتیجہ تھا بلکہ انسداد دہشت گردی قوانین کے تحت قائم مقدمات کے حوالے سے ایک اہم نظریاتی قائم کرتا ہے۔ یہ مقدمہ سنہ 2018 میں اس وقت درج کیا گیا تھا جب دونوں افراد کو 7 ستمبر کو دہلی کے تاریخی علاقے لال قلعہ کے قریب سے گرفتار کیا گیا تھا۔ ان پر غیر قانونی سرگرمیوں کی روک تھام کے قانون (UAPA) اور آرمز ایکٹ کے تحت دہشت گردی سے روابط اور جرمانہ سازش جیسے سنگین الزامات عائد کیے گئے تھے۔ گرفتاری کے بعد دونوں ہی افراد تقریباً آٹھ سال تک قید میں رہے، اس دوران مقدمے کی کارروائی غیر معمولی تاخیر کا شکار بھی ہوئی۔ عدالتی ریکارڈ کے مطابق کیس میں فرد جرم عائد کرنے میں بھی طویل وقت لگا اور اپریل 2022 میں جا کر چارج